वनांचल की पाती

संयुक्तांक

वर्ष 19 । जनवरी - जून, 2025 । विक्रमी संवत् 2082

वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन

(वन वनबंधुओं एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

मन की शक्ति

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

समाजिक जीवन में प्रचलित कहावत है, 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। मन की शक्ति अर्थात इच्छाशक्ति वह आंतरिक ऊर्जा है जो मनुष्य को लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सतत प्रयासरत रहने एवं इस मार्ग में आने वाली मुश्किलों एवं बाधाओं से जूझने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। यह एक ऐसी अदृश्य शक्ति है जो असंभव कार्य को भी संभव बनाने की क्षमता रखती है। इच्छाशक्ति के बिना व्यक्ति का प्रत्येक प्रयास अर्थहीन होता है। इच्छाशक्ति को इस प्रकार समझा जा सकता है, अपनी इच्छाओं को संकल्प के रूप में परिणत करना। मन में उठने वाले किसी भी विचार को क्रियान्वयन के धरातल पर सफलतापूर्वक उतारकर उसे एक पूर्ण लक्ष्य के रूप में परिवर्तित कर देने की मानसिक एवं नैतिक क्षमता को भी इच्छाशक्ति कह सकते हैं। जिस व्यक्ति की मन की शक्ति प्रबल होती है, वह इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हुए सफलता की ओर उन्मुख होता है। मन को भटकने नहीं देता है।

इच्छाशक्ति आत्मनियंत्रण की कुंजी होती है। इच्छाशक्ति एवं आत्मविश्वास का नितांत गहरा संबंध है। सच कहें तो दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। इच्छाशक्ति जितनी प्रबल होगी, आत्मविश्वास उतना ही दृढ़ होगा। अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करने के लिए हमारे पास एक सुस्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्यविहीनता की स्थिति में हम इच्छाशक्ति को कदापि दृढ़ नहीं कर सकते। अपने लक्ष्य के प्रति सकारात्मक सोच, कठोर परिश्रम का भाव, अनुशासित जीवनशैली को विकसित करने के लिये आसन, प्राणायाम, ध्यान और साधना जैसे संस्कारों से हम जुड़ें और सबको जोड़ें। इन प्रक्रियाओं को अपनी दिनचर्या में शामिल करना हमारी इच्छाशक्ति को सुदृढ़ बनाता है। इच्छाशक्ति के अभाव में आलस्य, असफलता, प्रमाद एवं निराशा जैसे भाव हमारे मन को घेर लेते हैं। इच्छाशक्ति जीवन की वह धुरी है, जिस पर सफलता, आत्म–संतुलन और चरित्र टिका होता है। यह वह शक्ति है जो साधारण मनुष्य को भी असाधारण बना सकती है। इच्छाशक्ति से संपन्न व्यक्ति स्वयं को, अपने भविष्य को एवं यहां तक कि परिवार, समाज और राष्ट्र के भी रूपांतरण का सामर्थ्य रखता है। वह युवा महापुरूष बन जाता है। हर काल और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे लोग होते हैं। **इस प्रक्रिया को तेज करने की योजना का नाम है, संस्कार परिवार योजना।**

VRPF

राष्ट्रीय संस्करण

वनांचल की पाती

संयुक्तांक

वर्ष 19 | जनवरी से जून, 2025 | विक्रमी संवत् 2082

सम्पादकीय

सभी पाठकों को विक्रम संवत 2082 की शुभकामनाएं ! हम जनवरी माह से मकर संक्रांति, महाकुंभ, गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी, होली उत्सव, नव वर्ष प्रतिपदा, रामनवमी हनुमान जयंती आदि हिन्दू उत्सव तथा जून माह में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, पर्यावरण दिवस आदि मनाते हुए अब रक्षाबंधन से दिवाली तक विभिन्न उत्सवों के द्वारा अपनी सनातन संस्कृति को गुंजायमान करते रहेंगे। हमारे प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों तथा उनके परिवारों ने केन्द्र संचालन समिति के मार्गदर्शन तथा आचार्य के परिश्रम से रामनवमी को समर्पण दिवस के रूप में, होली को संगठन के पूरे परिवार के साथ तथा अन्य त्योहार भव्य रूप में मनाए, जिनकी कुछ झलक इस पाती में अवश्य मिलेगी।

यह संयोग ही रहा कि इसी माह में देश में शहीद वनवासी बिरसा मुंडा की जयंती दिवस को जनजातीय दिवस के रूप में मनाया गया। 5 जून को इस बार फिर विभिन्न भ्गवद्मूतियों के साथ श्री राम दरबार को अयोध्या के राम मंदिर में स्थापित कर सनातन संस्कृति व परंपरा की धारा बहा दी। यह निश्चय ही सनातन राष्ट्र की प्रकल्पना के साथ सनातन विश्व के स्वप्न को साकार करने का संकेत है। प्रयागराज महाकुंभ की भव्यता द्वारा भी हम निस्संदेह नवीन ऊर्जा से आप्लावित हो रहे हैं।

हमारे संगठन की स्थाई **संस्कार परिवार योजना** के संस्कारपूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण शुद्धि तथा स्वदेशी के प्रयोग रूपी बिंदुओं का भी संपूर्ण देश में इन दिनों प्रभाव दिख रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी 'मन की बात' कार्यक्रम में **Local for Vocal** द्वारा स्वदेशी के प्रयोग, योग, 'एक पौधा मां के नाम' व देश के दर्शनीय स्थलों की यात्रा पर जोर देने के साथ अनवरत धार्मिक स्थलों के नवीनीकरण द्वारा इन्हीं बिंदुओं को विकसित कर रहे हैं।

संगठन ने इस वर्ष कार्य विस्तार का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा, देश के 30 प्रान्तों में 2100 प्रतिभा विकास केन्द्र तथा संस्कार परिवार योजना द्वारा 2 लाख परिवारों को संगठन की दैनिक गतिविधियों से जोड़ेगा।

इस पत्रिका में माननीय वीरेंद्र जी के प्रेरक लेख के साथ 'हनुमच्चरितम' के क्रमशः लेख में हनुमान जी की पूछ की वास्तविकता, असम की वनयात्रा के साथ नोएडा विभाग द्वारा बच्चों के आवासीय शिविर पर लेख भी मिलेंगे जो आपको सुखद अनुभव प्रदान करेंगे।

अस्तु ! मुझे विश्वास है कि हम सब कार्यकर्ता, पाठकगण सबका साथ देते हुए एक निष्ठ होकर संगठन के विभिन्न प्रकल्पों में सहयोगी बनकर वनवासी–षहरी वंचित समाज को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में अपना दायित्व निर्वहन करेंगे। हमारे सम्मिलित प्रयास से ही समरस समाज की संकल्पना जीवन्त हो सकेगी।

भारत माताकी जय!

डा0 रुकमणी गुप्ता, 9868222540
संगठन मंत्री, केन्द्रीय महिला समिति

मार्गदर्शक मण्डल

श्री वीरेन्द्र कुमार, संगठन प्रभारी
श्री मनोज अरोडा, केंद्रीय अध्यक्ष
श्री रविदेव गुप्ता, अध्यक्ष EVFI
श्री वेद बंसल, केंद्रीय उपाध्यक्ष

सम्पादकीय मण्डल

डा. रुकमणी गुप्ता
दिग्विजय गुप्ता
माधव शर्मा

प्रकाशक

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन

Vanvasi Raksha Parivar Foundation
B-4, Housing Society, South Extension Part 1,
New Delhi -110049, India
Ph: +91-11-47980066, +91-11-47011669
Mobile: +91-9667260911
E-mail: vrpfdelhi8@gmail.com
Web : www.vrpf.org.in

कापीराइट @ वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन, सभी अधिकार सुरक्षित

पत्रिका में प्रकाशित लेख और विचारों का अभिप्राय समिति के उद्देश्यों और योजनाओं के प्रति चेतना और जागरुकता पैदा करना है। लेखकों के व्यक्तिगत विचार और चिंतन समिति के चिंतन दर्शन से भिन्न हो सकते हैं। लेख मे दिये गये तथ्यों और आंकड़ों की सटीकता, वैधता और पूर्णता का उत्तरदायित्व लेखकों का रहेगा।

सम्पादक की अनुमति के बिना पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचना आदि के किसी भी अंश का अन्य प्रत्रिकाओं में प्रकाशन अवैधानिक होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक :–
श्री मनोज अरोड़ा, (अध्यक्ष),
वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित
मुद्रकः प्रिन्टेक इन्टरनेशनल,
A-6/D, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली–95 से मुद्रित।
ई–मेल: printechinternational@gmail.com

शब्दाभिनंदन

सभी भगिनी–बंधु को मेरा जय सियाराम! यह मेरा परम सौभाग्य रहा कि मुझे इस वर्ष भी होली का परिवार मिलन कार्यक्रम 12 मार्च 2025 को अपने निवास 'सुगंधा फॉर्म' में आयोजित करने का अवसर मिला। दिल्ली के अंतिम छोर पर भी संगठन के अधिकतम कार्यकर्ता तथा प्रतिभा विकास केंद्र के आचार्य तथा विद्यार्थियों ने अपनी उपस्थिति के साथ मनोहारी कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

दिल्ली एन.सी.आर तथा अन्य प्रांतों व वनवासी समाज में प्रतिमा विकास केंद्र का यह प्रकल्प दिनोंदिन उन्नति पर है। एन.सी.आर के नोएडा विभाग ने स्थानीय प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों का दो दिवसीय आवासीय 'चैतन्य शिविर' आयोजित कर मानों इतिहास रच दिया। 170 बच्चों को 2 दिन रखकर उन्हें दैनिक दिनचर्या, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मनोरंजन कार्यक्रमों द्वारा झुग्गी–झोपड़ी समाज के रहन–सहन से बाहर निकालने का प्रयास किया।

इस वर्ष संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा संगठन के लक्ष्य प्राप्ति हेतु अप्रैल माह में तीनों संभागों के चिंतन वर्ग तथा फिर विभागशः चिंतन वर्ग आयोजित कर संगठन को नगर–स्तर तक सक्रिय करने के बिंदु गढ़े गए।

पूरे देश में वंचित पीड़ित, शहरी, तथा वनवासी समाज में संस्कार, शिक्षा, स्वावलंबन के प्रचार हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों के संगठन के सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का पांच दिवसीय आवासीय चिंतन वर्ग वृंदावन की पावन भूमि में सफलतापूर्वक संपन्न कर उन्हें और अधिक उत्साह से काम करने के लिए उनमें नई ऊर्जा का संचार किया।

संगठन के प्रचार–प्रसार हेतु संगठन की अविरल चलने वाली स्थानीय योजना वनयात्रा इस वर्ष मार्च में 3 दिनों की आसाम के वनवासी क्षेत्र में संपन्न हुई। एक बार फिर से संगठन के कार्यकर्ता वनांचलों की स्थिति का साक्षात दिग्दर्शन कर नये बंधुओं के साथ संगठन के प्रति सक्रियता के साथ इसे आगे बढ़ाने के लिए ऊर्जान्वित होकर आए हैं।

बंधुओं! हमें शहरी–वनवासी क्षेत्र में प्रतिभा विकास केंद्रों की संख्या नियमित बढ़ाते हुए वंचित, पिछड़े समाज को शिक्षित, संस्कारित, स्वावलंबी बनाने का लगातार प्रयास कर इन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। तभी **श्रेष्ठ समाज श्रेष्ठ भारत** के अपने संकल्प को मूर्त रूप प्रदान कर भारत विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर होगा, जिसका सपना स्वामी विवेकानंद ने देखा था। आप सबसे लगातार सहयोग की कामना के साथ।

अस्तु ! एक भारत श्रेष्ठ भारत

आपका शुभेच्छु

मनोज अरोड़ा
केन्द्रीय अध्यक्ष, वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

नई शिक्षा नीति - एक सकारात्मक प्रयास

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

भारत में गत सौ वर्ष से अधिक काल से चल रही स्वाभिमान शून्य शिक्षा को प्रारम्भ करने वाले षडयंत्रकारी लार्ड मैकाले को देश जानता है। मैकाले का अपने पिता के नाम पत्र प्रसिद्ध है, जिसमें वह कहता है मैने ऐसी शिक्षा पद्धति को विकसित किया है, जिससे यह हिन्दु सामान्य ढंग से भारतीय दिखेगा। पर मन (आत्मा) से अंग्रेजों का दास हो जाएगा। आजादी के बाद 70 वर्ष तक हम संघर्ष करते रहे पर शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन नहीं किया। यह दु:खद है, पर यह दु:खद दिन का अवसान तथा सुखद काल का आरंभ था।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने हाल ही में कक्षा–8 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक 'एक्सप्लोरिंग सोसायटी, इंडिया एंड बियोंड' में कतिपय परिवर्तन किए हैं। इस पहल का मूल उद्देश्य इतिहास, भूगोल, आर्थिक जीवन और शासन प्रणाली जैसे विषयों को एकीकृत करते हुए विद्यार्थियों के अंदर भारत के स्व के बोध के साथ सामाजिक विकास की समग्र समझ विकसित करना है।

वर्षों से जिस संतुलित इतिहास लेखन की मांग की जा रही थी, यह पुस्तक उसी दिशा में एक ठोस प्रयास प्रतीत होती है। इस पुस्तक में 13वीं से 17वीं शताब्दी के मध्यकालीन इतिहास को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। जिसमें दिल्ली सल्तनत के उत्थान और पतन, समकालीन प्रतिरोध, उस युग की राजनीतिक अस्थिरता, सैन्य अभियान, विजयनगर साम्राज्य, मुगलों एवं उनके प्रतिरोध, मराठों और सिखों के उदय आदि का विश्लेषण ऐतिहासिक साक्ष्यों के आलोक में किया गया है।

पाठ्यपुस्तकों को युगानुकूल और भारत–केंद्रित बनाना समय की मांग है। भारतीयों को गुलामी की मानसिकता से मुक्ति दिलाने के लिए यह आवश्यक है। दिल्ली सल्तनत एवं मुगलों के इतिहास को चयनात्मक दृष्टि से ही पाठ्यपुस्तकों में क्यों पढ़ाया जाना चाहिए? बाबर ने खानवा का युद्ध, चंदेरी का युद्ध, घाघरा का युद्ध एवं अन्य अनेक आक्रमणों के दौरान कत्लेआम और लूटमार को अंजाम दिया था। युद्धों के पश्चात मारे गए हिंदुओं की खोपड़ियों की मीनारें खड़ी करने की बातें उसकी आत्मकथा 'बाबरनामा' में विस्तार से दर्ज हैं।

अकबर की कथित महानता का भी हमारी पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार यशोगायन किया गया है कि उसके नाम के बाद 'महान' विशेषण न जुड़े तो कुछ छूट जाने का आभास

होता है। जबकि सच्चाई यह है कि चितौड़ के किले की घेराबंदी के दौरान उसने 1568 में करीब 30,000 हिंदुओं का नरसंहार किया था जिसमें स्त्रियां, बच्चे और किसान तक शामिल थे। स्वयं अकबर द्वारा नौ मार्च, 1568 को प्रकाशित 'फतेहनामा–ए–चितौड़' इन तथ्यों की गवाही देता है। इस फतेहनामे को 1598 में संकलित 'मुंशत ए–नमकीन' में भी सम्मिलित किया गया है। इसके संकलनकर्ता अकबर के दरबारी मीर अब्दुल कासिम नमकीन थे। अकबर के समकालीन आरिफ मोहम्मद कंधारी ने अपनी पुस्तक 'तारीख ए–अकबरी' में भी इसका उल्लेख किया है।

अकबर के अन्य दरबारियों में प्रमुख अबुल फजल की पुस्तक 'आइने अकबरी' एवं 'अकबरनामा' तथा इमाम अब्दुल कादिर बदाउनी की पुस्तक 'मुंतखाव–उत–तवारीख' भी उसकी क्रूरता, मजहबी कट्टरता एवं कामुकता के अतिरंजित विवरणों से भरी हैं। उसे एक आदर्श नायक की तरह सिनेमा तथा इतिहास में प्रस्तुत किया गया, जबकि अबुल फजल के अनुसार अकबर के हरम में लगभग पांच हजार औरतें थीं और ये पांच हजार औरतें उसकी 36 पत्नियों से अलग थीं। वह सुंदर स्त्रियों का बलात अपहरण करने एवं उन्हें अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए मीना बाजार लगवाता था। उसकी क्रूरता की यातनाप्रद प्रक्रिया से बचने तथा अपनी अस्मिता तथा स्वाभिमान की रक्षा के लिये हिन्दु बहनें जलती चिता में जलकर जौहर कर लेने को अपने जीवन से अधिक सम्माननीय मानती थीं। चरित्र की दृष्टि से इतने दुर्बल एवं बर्बर शासक को स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद तक किस मानसिकता से पाठ्यपुस्तकों में महान पढ़ाया जाता रहा और मातृभूमि, स्वराज, स्वधर्म एवं स्वत्व की रक्षा के लिए लड़ने वाले महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी जैसे योद्धाओं को जानबूझकर छोटा साबित किया गया? क्या एक भी ऐसा उदाहरण है, जब छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप या अन्य किसी सनातनी शासक ने धर्म या पूजा–पद्धति के आधार पर गैर सनातनी मतावलंबियों से भेदभाव किया हो या उनका नरसंहार किया हो या उनके उपासना–स्थल तोड़े हों? फिर मजहब के आधार पर गैर मुसलमानों का

कत्लेआम करने वाले मुगल कैसे महान हो गए?

यह सर्वमान्य तथ्य है कि औरंगजेब तलवार के बल पर हिंदुस्तान को दारुल हरम से दारुल इस्लाम में परिणत करना चाहता था। उसकी नजर में हर हिंदू केवल और केवल काफिर था, जिनका खून बहाना, जिनके मंदिर नष्ट करना, जिनकी आस्था को निर्दयतापूर्वक कुचलना वह अपना पाक और मजहबी फर्ज समझता था। 12 अप्रैल, 1669 को उसने हिंदुओं पर जजिया कर लगाने का आदेश दिया। औरंगजेब ने हिंदू त्योहारों पर पाबंदी लगा दी थी और जब तक वह जिंदा रहा, तब तक हिंदू न खुलकर दीपावली मना पाए, न होली ही खेल सके। उसने अपने पूरे राज्य में हिंदुओं के मंदिरों, शिक्षा केंद्रों और पवित्र स्थलों को तोड़ने के आदेश दिए थे। उसके आदेश पर काशी के विश्वनाथ मंदिर, मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर और पाटन के सोमनाथ मंदिर समेत हजारों मंदिर गिरा दिए गए थे। 1688 में उसने हिंदुओं के लिए पालकी, हाथी और घोड़े की सवारी पर पाबंदी लगा दी और अस्त्र–शस्त्र रखने को अपराध घोषित कर दिया।

हिंदुओं पर किए गए औरंगजेब के बर्बर एवं पाशविक अत्याचार का विस्तृत विवरण उसके ही एक दरबारी मुहम्मद साकी मुस्तइद खान की पुस्तक 'मआसिर–ए–आलमगीरी' में पढ़ने को मिलता है। समय आ गया है कि अब नरसंहार करने वालों का महिमामंडन बंद कर स्व, स्वत्व और भारत केंद्रित इतिहास के पुनर्लेखन के साथ विज्ञान–स्थापत्य कला तथा जीवन के सभी क्षेत्रों में भारत के योगदान को आगे बढ़ाने का संकल्प पूर्ण करने का प्राथमिक प्रयास प्रतिभा के द्वारा शुरू किया गया है।

वर्तमान शताब्दी को सनातन की शताब्दी बनाने के लिए स्वाभिमान के साथ आत्म विश्वास पूर्ण पीढ़ी के निर्माण द्वारा ही यह पूर्ण होगा। विजयी भारत, **''विश्व गुरू भारत''** ही वसुधैव कुटुम्बकम् का दायित्व पूर्ण करेंगे। विश्व का कल्याण हो ! का उद्घोष हिन्दु करते आ रहे हैं, यह सार्थक होगा।

होली परिवार मिलन कार्यक्रम–12 मार्च, 2025

इस वर्ष का होली परिवार मिलन कार्यक्रम संगठन के अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा ने अपने निवास सुगंध फॉर्म एफ–30, राधे मोहन ड्राइव नई दिल्ली में आयोजित कराकर कार्यक्रम को सफलता एवं गौरव प्रदान किया। कार्यक्रम 12 मार्च सायं 3:30 से प्रारंभ होकर रात्रि 08:00 बजे भोजन प्रसाद से संपन्न हुआ जिसमें प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों से अलग पृथक् उपस्थित बंधुओं की संख्या 200 से अधिक रही। इस कार्यक्रम में माननीय आलोक कुमार (अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद्), माननीय डॉ अनिल अग्रवाल (प्रांत संघचालक संघ रा0 स्व0 संघ) माननीय सुधांशु त्रिवेदी (राज्यसभा सांसद व राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा) तथा श्री विजेंद्र गुप्ता, (अध्यक्ष दिल्ली विधानसभा) की गरिमामय उपस्थिति, मुख्य अतिथि डा0 पायल कनोडिया (अध्यक्ष एम3एम) तथा श्री बजरंग लाल बागड़ा (महामंत्री विहिप), माननीय वीरेंद्र कुमार (संगठन प्रभारी), संगठन के वरिष्ठ सहयोगी बंधु विवेक नागपाल, श्री अशोक अग्रवाल, श्री सुभाष अग्रवाल, श्री राजेंद्र चमड़िया तथा छतरपुर विधानसभा के विधायक श्री करतार सिंह तंवर की उपस्थिति ने कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की।

कार्यक्रम प्रार्थना मंत्र के उच्चारण तथा पांच प्राणायाम के सामूहिक अभ्यास से प्रारंभ हुआ। दक्षिण विभाग कार्यकर्ता श्री राजेश सिंह के मंच संचालन में प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों ने फैंसी ड्रेस में सनातन परंपरा के प्रेरक श्रीराम के भजन तथा अन्य होली संबंधित लोकगीतों पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। इसके साथ ही बृज से आई राजेश जी की टोली ने बृज वंदना के बाद राधा कृष्ण को मध्य में रखते हुए अत्यंत आकर्षित लोक लुभावन नृत्य प्रस्तुत किये जिनसे प्रभावित होकर संगठन कार्यकर्ता परिवार भी मंच के ऊपर तथा नीचे सामूहिक नृत्य में सम्मिलित हुए बिना स्वयं को न रोक सके। बहुत ही मनोहारी रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई।

होली कार्यक्रम से सरोबार होने के पश्चात मंच संचालक श्री राजेश सिंह ने आलोक कुमार जी, डॉक्टर अनिल कुमार अग्रवाल, सुधांशु त्रिवेदी जी, आदित्य जी, विजेंद्र गुप्ता जी, बजरंग लाल बागड़ा जी, करतार सिंह तंवर जी, वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के संगठन प्रभारी मा0 वीरेंद्र जी के साथ संगठन के वरिष्ठ सहयोगी बंधुओं, संगठन अध्यक्ष मनोज अरोड़ा जी, केंद्रीय महिला समिति प्रभारी अमिता प्रकाश जी तथा समिति कार्याध्यक्षा शशी आजाद जी को मंच पर आमंत्रित किया। श्री मनोज अरोड़ा तथा अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने आगंतुकों का शाल, तुलसी पौधे द्वारा अभिनंदन व स्वागत किया। श्री मनोज अरोड़ा ने स्वागत भाषण जय श्रीराम ! जय श्रीकृष्ण ! के नारे से प्रारंभ कर समस्त आगंतुक अतिथियों, कार्यकर्ता परिवारों तथा प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों का हार्दिक अभिनंदन, स्वागत किया।

उन्होंने प्रसन्नता मुद्रा की में बताया कि प्रशासन (सरकार) बदलने से हमारे देश का रंग बदला है, हमारा जीवन भी बदला है। हम स्वयं को अपनी सनातनी परंपरा से जुड़ा महसूस कर रहे हैं। राम मंदिर निर्माण तथा सनातन परंपरा

से जुड़े उत्सवों में प्रधानमंत्री तथा अन्य नेताओं की उपस्थिति को अनुभव कर पा रहे हैं। दशकों बाद यमुना की सफाई तथा उसमें स्नान का स्वप्न पूरा करने के प्रति पूर्ण आशान्वित हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के उद्देश्यों वनवासी – नगरवासी में समरसत्ता के उद्देश्य, को जानकर हम अपने को भाग्यशाली मानते हैं इस संगठन से जुड़ने पर।

माननीय वीरेंद्र जी संगठन प्रभारी मा0 वीरेंद्र जी ने होली के पावन त्यौहार पर सभी उपस्थित बंधुओं परिवारों का स्वागत कर संगठन के कार्यों के विषय में बताया कि पिछले 4 महीनों में दिल्ली एनसीआर सहित पूरे देश में ढेरों संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम किये। दिल्ली में 20000 परिवारों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया। इन कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से वंनाचलों, शहर के वंचित, मध्यम, उच्चवर्ग परिवारों को सनातन परिवार बनाने का संदेश दिया। देशभर के 50000 परिवारों ने संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रमों में भाग लिया। राजस्थान के पांच जिलों में भी ये कार्यक्रम संपन्न हुए, जहाँ वनवासी गांवों के बच्चों ने सुंदर कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इस वर्ष दिल्ली में 45 कार्यकर्ताओं ने नए बंधुओं के साथ आसाम की तीन दिवसीय यात्रा की। वहाँ वनयात्रियों के स्वागत में बच्चों ने जो प्रस्तुति दी, इन वनयात्रियों ने वनवासी बच्चों को प्रथम तथा दिल्ली के बच्चों को दूसरे नंबर पर रखा। निश्चय ही प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से वनवासी बच्चों की प्रतिभा निखरती, उभरती दिख रही है। गांव में 27000 बच्चे इन केंद्रों में पढ़ रहे हैं, इसी वर्ष के अंत तक इनको 50000 तक पहुंचाने का लक्ष्य है। अंत में उन्होंने वर्ष 2026 में आयोजित होने वाले संगठन के **तृतीय कुंभ** की चर्चा करते हुए बताया कि इस कुंभ के माध्यम से देश को लाखों लोगों के सनातन परंपरा के साथ जोड़ेंगे।

डॉ0 बजरंग लाल बागड़ा–माननीय बजरंग लाल बागड़ा ने प्रारंभ में ही बहुत उत्साह में राम मंदिर निर्माण की चर्चा की जिसमें निर्माणार्थ व्यय के लक्ष्य से 5 गुना संग्रह हुआ, न्यूनतम 1–2–5 रु. से लेकर लाख करोड़ तक का संग्रह। उन्होंने राम मंदिर प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम हेतु संपूर्ण देश में सुनियोजित रुप से राम मंदिर से भेजे गए अक्षत वितरण की भी चर्चा करते हुए कहा कि आज सनातन हिंदू धर्म का मूल स्वरुप देखने में हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसी प्रकार इसी वर्ष प्रयागराज में संपूर्ण विश्व को समेटते हुए हिंदू धर्म की जो भव्यता दिखी वह अद्‌भुत थी, जिसमें सभी धर्म, पंथ, जाति की पूर्ण समरसता दृष्टिगत हुई। अर्थात हिंदू समाज में श्रद्धा–आस्था का ज्वार ठंडा नहीं पड़ा है। अतः महाकुंभ की समरसता हमारे दैनिक जीवन में भी हो। हमारी परिवार व्यवस्था जो सनातन हिंदू धर्म की रीढ़ है, इन गुणों को आत्मसात कराने का आधार है। इसी परिवार व्यवस्था को लेकर चल रहा है वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन। प्रतिभा विकास केंद्र के 27000 बच्चों की जिम्मेदारी दिल्ली के परिवारों की ही है। सनातन की शक्ति हमने चुनाव के माध्यम से दिल्ली, हरियाणा और महाराष्ट्र में देखी है। वनांचलों में भी प्रतिभा की कमी नहीं है, इसे उभारने के लिये समय–समय पर आप अपने परिजनों, मित्रों के साथ वनयात्रा में जाएं। मैं

बहुत वर्षों के अनुभव से यह कह सकता हूँ कि वनवासी रक्षा परिवार का कार्य बहुत परिणामकारी है।

डॉ. अनिल अग्रवाल, जो एक हृदय विशेषज्ञ भी हैं, ने कहा हम वनांचलों के परिवारों के बारे में भी सोचें जो हमारे अपने ही हैं, हमारे ही समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं जिन्हें न्यूनतम सुविधाएं भी प्राप्त नहीं हैं। अतीत में अनेक आक्रांताओं के आक्रमण को निर्मूल करने में इन वनवासी बंधुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज इस परिवार मिलन कार्यक्रम में हम प्रण करें कि हम वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की मुहिम से जुड़कर अपने परिवारजनों, मित्रों को इस संगठन को जोड़ेंगे।

राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ सुधांशु त्रिवेदी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि आज 27 वर्ष बाद ऐसी होली आई है जिसनें यमुना को रंग से सरोबार होने की उम्मीद जगाई है। भारतीय संस्कृति की जीवंतता वनक्षेत्र में ही प्राप्त हुई। राजाराम वन में जाकर ही भगवान बने, श्रीकृष्ण तो है ही विपिन बिहारी वनवारी। आज देश के सामने अनेकों चुनौतियां हैं, परंतु अब होली पर सनातन का रंग चढ़ता नजर आ रहा है, जितना मतदान उससे अधिक महाकुंभ में स्नान। 450 वर्ष बाद इलाहाबाद नहीं प्रयागराज में महाकुंभ हुआ जहां 73 देशों से 50 लाख विदेशी, तथा प्रवासी भारतीय आए, अयोध्या उत्तर प्रदेश का एक स्वतंत्र जिला बन गया, औरंगाबाद अब छत्रपति संभाजी नगर हो गया, चंद्रयान उतारने का स्थान शिव शक्ति केंद्र हो गया। सच में कितना बड़ा परिवर्तन है। हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने वनवासी समाज के लिए बहुत काम किया है। शहीद बिरसा मुंडा के जन्म दिवस को वनजनजातीय शौर्य दिवस नाम दिया, Tribals के लिए पृथक मंत्रालय बनाया। अधिक क्या, वनवासी समाज की महिला को देश के सर्वोच्च शिखर राष्ट्रपति पद पर आसीन किया। यह संगठन भी देश की अंतिम सीमा तक प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से वनवासी समाज में नई उमंग तरंग भरता हुआ भारत को विकसित बनाने का रंग भर रहा है।

स्थानीय विधायक श्री करतार सिंह तंवर ने कहा कि जाति, धर्म, पंथ के भेदभाव से दूर रहकर एकता का जो मंत्र महाकुंभ ने दिया वही संदेश आज वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन संगठन दे रहा है। गर्व की बात है कि आज देश के प्रधानमंत्री 'विश्व मित्र' उपाधि प्राप्त कर 27 देशों से सम्मान पाने वाले अद्भुत नेता बन गए हैं।

दिल्ली के विधानसभा अध्यक्ष श्री विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि 'जहां कम–वहां हम' की नीति अपनाते हुए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का उद्देश्य वनवासियों को देश की मुख्य धारा में लाने, शिक्षित करने का है। हमारी सरकार का भी उद्देश्य दिल्ली की समस्त चुनौतियों को समझकर उन्हें समाप्त करना है जिससे निश्चय ही यहां का दलित–वंचित समाज भी लाभान्वित होगा।

अंत में श्री मनोज अरोड़ा ने सभी का धन्यवाद करते हुए यह विश्वास दिलाया कि हम दिल्ली के समान अन्य प्रातों में भी गति के साथ काम करेंगे और सभी परिवारों बच्चों आचार्य को भोजन का आमंत्रण दिया।

होली मिलन कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

मम मंत्रः समानता।
VRPF

मम दीक्षा, हिंदू
VRPF

VRPF

असम वनयात्रा एक सुखद अनुभव

शशी आजाद
कार्याध्यक्षा–केन्द्रीय महिला समिति
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

इस वर्ष मार्च माह में असम वनयात्रा की 3 दिवसीय पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 7 मार्च दोपहर प्रातः हमने दिल्ली हवाई अड्डे से गुवाहाटी के लिए प्रस्थान किया। वहां से आगे का सफर बसों से हुआ। बस में बैठते ही स्वादिष्ट नाश्ते का डिब्बा सभी को मिल गया और गाते बजाते हम टांगला की और निकल पड़े। बाहर का दृश्य बहुत ही मनोरम था। सड़क के दोनों ओर नारियल व केले के पेड़ व चाय के बागानों ने बहुत ही मनोरम दृश्य बनाया हुआ था। प्रकृति अपनी सुंदर छटा बिखेर रही थी।

दोपहर 02:30 बजे हम **ओरंगाजुली** चाय बागान में स्थित एक प्रतिभा विकास केंद्र पहुंचे, वहीं पर हमने स्वादिष्ट भोजन किया, जो वहां के बच्चे, उनकी आचार्य और अभिभावकों ने बहुत ही प्यार से परोसा। बहुत ही प्रेम से उन्होंने भोजन खिलाया। उन्होंने बहुत ही अच्छी चाय पिलाई जिससे सारी थकान दूर हो गई। चाय बिना दूध की हर्बल चायपत्ती से बनी थी। उनके अतिथि सत्कार से सब भाव–विभोर हो गए।

हमारा दूसरा पड़ाव बानुरांजुलि बागान का केंद्र था। वहां बच्चों में अपने संस्कार पक्ष की प्रस्तुति दी। वहां से हम बादलापुरी चाय बागान गये, केंद्र के दर्शन किये बच्चों ने अपना संस्कार पक्ष प्रस्तुत करके दिखाया। अभिभावकों व स्थानीय लोगों से भी चर्चा हुई। वहां से हम अपने टांगला होटल में पहुंचे। तैयार होकर फिर पास के एक मंदिर में गए जहां पर स्थानीय माननीय व्यक्तियों से तथा हमारे वहां के कार्यकर्ता के साथ बैठक की। स्थानीय लोगों ने बहुत सुंदर, भजन सुनाए स्थानीय लोगों ने हमारे कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग देने का आश्वासन दिया। रात्रि के भोजन पश्चात् सब विश्राम करने चले गए।

सुबह 7:00 बजे सब तैयार होकर नाश्ता करके अपने अगले पड़ाव उदालगुड़ी जिले के दीमाकुची प्रखंड में पहुंच गए। बच्चों ने ढोल बजाकर स्वागत किया ,रंग–बिरंगे परिधानों में ढोलक की ताल पर नित्य करते हुए बच्चों का दृश्य बहुत ही मनमोहक था। इस कार्यक्रम में दीमाकुची प्रखंड के सभी प्रतिभा विकास केंद्रों के बच्चों ने सहभागिता की। कुछ बच्चे उड़ीसा की साड़ियों में थे, कुछ बंगाली साड़ियों में थे। तथा कुछ स्थानीय असमी वेशभूषा में थे। बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति बच्चों द्वारा की गई। बच्चों का मंत्र उच्चारण, बहुत अच्छी हिंदी, उनकी स्थानीय भाषा भी शुद्ध थी। हिन्दी भाषी न होने पर भी वे बहुत अच्छी हिंदी बोल रहे थे। सभी

अपने गांव से चलकर आए थे। उनके चेहरे पर थकान नहीं उल्लास था।

मेरे मन में बार–बार विचार आ रहा था कि इतनी कठिन परिस्थितियों में होने के बावजूद भी वे इतने खुश और संतुष्ट हैं। नगरीय लोगों के लिए यह एक बहुत बड़ा

सबक था जो हमें इन बच्चों से सीखने को मिला।

वहां से हमने **भूटान** की ओर प्रस्थान किया और 07:00 बजे भूटान के Shamdvup Jonghair गांव में पहुंचे, एक और देश के दर्शन हो गए। समय कम था, वहां पर बुद्ध स्तूप देखा और कुछ खरीदारी की और वापस टांगला के होटल में रात्रि विश्राम किया।

सुबह 8:00 बजे कामाख्या देवी के दर्शन के लिए गुवाहाटी के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में एक जगह दोपहर भोजन का इंतजाम था। 4:00 बजे दर्शन के लिए मंदिर पहुंच गए। काफी इंतजार के बाद मां कामाख्या देवी ने अपने दुर्लभ दर्शन दिए। मन को एक असीम शांत प्रदान की। मां की कृपा मिलने पर सब बहुत ही प्रसन्न थे। वहां से हवाई अड्डे पर पहुंचकर दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

ये तीन दिन बहुत ही प्रभावी तथा सबको उत्साहित करने वाले थे। बहुत सी चीज हमने इस यात्रा में सीखीं और एक अलग सा उत्साह सभी के मन में भर गया। कुछ करने की इच्छा, अधिक से अधिक बच्चों के लिए हम कुछ कर सकें, ऐसी भावना सभी के मन में थी।

श्रीहनुमच्चरितम् (क्रमश.............)

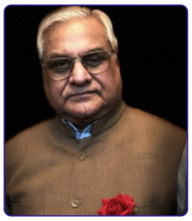

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

सम्पूर्ण हिन्दू समाज के आराध्य हनुमान जी मेरे हृदय में एक महाशक्तिशाली, ज्ञानवान्, अंजनी–पवन के पुत्र श्रीरामदूत के रुप में एक महामानव के रूप में विद्यमान हैं। इसी भाव से अभिभूत होकर वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा के गहन अध्ययन के बाद मुझे अनुभव हुआ कि इतना सर्वगुण सन्पन्न रामसेवक कोई मनुष्येतर प्राणी (बन्दर) नहीं हो सकता।

अपने इसी विचार को मैंने समय–समय पर श्रद्धालु समाज के समक्ष व्याख्यान रूप में प्रस्तुत किया। कोरोना काल में संयोग से ऑनलाइन माध्यम से भारत के अतिरिक्त जब इटली, जर्मनी, लेबनान, इंगलैंड व अमेरिका के प्रवासी भारतीयों ने अपने आराध्य ज्ञानगुण सागर–अतुलित बलधाम हनुमान जी के वास्तविक स्वरूप को सुना तो उन्होंने मुझसे इस तथ्य को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर समस्त विश्व के समक्ष रखने का अनुरोध किया।

इसी के परिणामस्वरूप 10 अध्यायों में 'श्रीहनुमच्चरितम्' पुस्तक लिखित रूप में प्रस्तुत कर पाया हूँ। आप सब प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष पुस्तक का प्रथम अध्याय व द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ, पंचम, षष्ठ अध्याय इस 'वनांचल की पाती' के पूर्व अंकों में प्रस्तुत किए जा चुके है। इस अंक में उसी का सप्तम अध्याय यहाँ प्रस्तुत है।

सप्तम अध्याय-पूंछ नहीं लांगूल-एक वस्त्राभूषण

यह एक अत्यन्त ही उद्वेलित करने वाला प्रश्न है जिसके उत्तर में हम वाल्मीकि रामायण का निम्न प्रमाण देते हैं। विभीषण के कहने पर रावण ने हनुमान को प्राणदंड न देकर ऐसा कहाः–

''कपीनां किल लांगूलमिष्टं भवति भूषणम्।
तदस्य दीप्यतां शीघ्रं तेन दग्धेन गच्छतु।।''

(वाल्मीकि रामायण सुंदरकांड 35.3)

अर्थात् ''वानर जाति के लिये इनका लांगूल सबसे प्रिय प्रतीक व उत्तम आभूषण होता है। अतः इसके लांगूल को जला दो और जाने दो।''

पाठकगण ! आप तनिक विचार करें कि लांगूल शरीर का अंग न होने के कारण हनुमान को शारीरिक नहीं प्रत्युत मानसिक कष्ट हुआ और इसीलिये प्रतिशोध के रूप में उन्होंने उस जली लांगूल से व्यापक अग्निकांड कर दिया।

लांगूल–वानर जाति का राष्ट्रीय चिन्ह

वाल्मीकि रामायण में वर्णित राक्षसराज रावण के उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'लांगूल' वानर जाति का राष्ट्रीय चिह्न (**Totem**) था जिसकी रक्षा वे प्राणपण से करते थे।

इस विषय में वाल्मीकि रामायण के एक अन्य अनुवादक, सम्पादक व टिप्पणिकर्ता, परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी स्वरचित टीका में अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहते है :–

''प्रायः टीकाकारों ने लाङ्.गूल का अर्थ 'पूंछ'

किया है। परन्तु यह अर्थ ठीक नहीं है। जब किष्किन्धाकांड (28 व 29) में हनुमान् को 'वेदादि शास्त्रों और व्याकरण का विद्वान बताया है तब उन्हें 'पूंछ वाला बन्दर' कहना मूर्खता है। वाली सुग्रीव, अंगद आदि सभी मनुष्य थे इनके लिए 'आर्य' विशेषण का प्रयोग यत्र–तत्र हुआ है। वाली की पत्नी तारा को मन्त्रवित् कहा गया है।

एक बात बड़ी विचित्र है कि यह पूंछ पुरूषों के ही दिखाई गई है तारा, रुमा आदि वानर स्त्रियों के लिए कही भी पूंछ का उल्लेख नहीं है। क्या कहीं ऐसे बन्दर भी होते है कि बन्दरों के तो पूंछ हो और बन्दरियों के पूंछ ही न हो?

लाड्गूल वानर जाति का राष्ट्रीय–चिह्न (**Totem**) होने के कारण ही इसे ये लोग बड़ी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे, तथा इसके अपमान को जातीय अपमान समझते थे। रावण ने हनुमान को अपमानित करने हेतु इसी राष्ट्रीय–चिह्न को जलाने की आज्ञा प्रदान की थी।

आजकल भी देखने में आता हैं कि ग्वाले अपनी पगड़ी में मोर पंख लगा लेते है परन्तु यह उनके शरीर का अंग नही होता। इसी प्रकार वानरजाति के लोग भी पूंछ सदृश कोई वस्तु लगा लेते थे। यह इनके शरीर का वास्तविक अंग नही था।''

(परमहंस स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती कृत **''श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणम''** के सुन्दरकांड से उद्घृत (पृष्ठ 413)

यह इनकी युद्ध की पोशाक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग था, यथा सिख समुदाय के लिये 'पगड़ी', ब्राह्मण के लिये 'शिखा व यज्ञोपवीत' आदि। महाराष्ट्र में आज भी लांग वाली धोती अथवा साड़ी का प्रचलन है।

लांगूल–केवल पुरुषों द्वारा प्रयुक्त वस्त्राभूषण :– उल्लेखनीय है कि यह ''लांगूल'' केवल वानर जाति के पुरूषों के ही लगाई जाती है। उनकी स्त्रियां तारा, रूमा आदि की नही।

इसी विसंगति द्वारा यह संशय रहित प्रमाण मिलता है कि केवल योद्धा पुरूष वर्ग ही इस वस्त्राभूषण का युद्ध की साज–सज्जा में प्रयोग करते थे।

एक अन्य आश्चर्यजनक तथ्य:–हमने बहुत ध्यान से प्रचलित चित्रों को सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया तो पाया कि यह बहु–चर्चित पूंछ बन्दर की है भी नहीं। हम सभी सहमत होंगे कि बन्दर की पूंछ :–

1. न इतनी लम्बी होती है
2. न ही उसके अन्त में बालों का गुच्छा होता है।
3. न ही बन्दर की पूंछ इस प्रकार से "S" के आकार में ऐंठी हुई होती है।
4. इस प्रकार की पूंछ 'सिंह' की होती है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त तथ्यों व प्रमाणों के सम्यक् अध्ययन व मनन से यही निष्कर्ष निकलता है कि चित्रकार स्वयं भी हनुमान को बंदर नहीं मानते हैं। सारी आकृति दो पैरों पर खड़े शूरवीर योद्धा मनुष्य की ही लगती है।

संभाग चिंतन वर्ग-पूर्वी संभाग चिंतन वर्ग

पूर्वी संभाग चिंतन वर्ग 13 अप्रैल 2025 को नोएडा के शिशु सदन में संपन्न हुआ। जिसमें पूर्वी विभाग, गाजियाबाद विभाग, यमुना विहार, नोएडा विभाग के जिला स्तर तक के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त संभाग संबंधित युवा तथा महिला समिति की बहने भी उपस्थित रहीं। यह वर्ग 6 सत्रों में संपन्न हुआ।

प्रथम सत्र प्राणायाम, गीत वाचन तथा जलपान के पश्चात 9:30 बजे पहला सत्र मा0 वीरेंद्र जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावना से प्रारंभ हुआ। इस सत्र में उन्होंने बताया कि संगठन की यात्रा 2007 में हुई जिसमें दिल्ली के माध्यम से कुछ प्रांतो के वनवासी क्षेत्र से काम शुरू हुआ। जहां हिंदू धर्मांतरित होकर ईसाई बन गए थे। अतः उन्हें हिंदू परिवार के चिन्ह श्रीराम–श्रीकृष्ण के लॉकेट, झंडा, माला, फोटो तथा तुलसी का पौधा प्रदान कर हिंदुत्व की पहचान दी गई। दूसरी यात्रा 2011 से 2020 (10) वर्षों तक चली जिसमें संगठन ने देश की अंतिम सीमा पर बसे दलित वंचित वनवासी परिवारों को धर्मांतरण, उग्रवाद, नशे की लत से छुड़ाने के उद्देश्य से वृंदावन–अयोध्या में प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करके उनके बच्चों को संस्कार शिक्षा प्रदान कि जिन्होंने बाद में वनवासी गांवों में घूम कर संस्कारों का प्रचार–प्रसार प्रदान किया। यह सब कार्य दिल्ली के रक्षा परिवारों के सहयोग से संभव हो सका।

2020 में यह प्रश्न उठा कि अब दिल्ली जैसे महानगर की झुग्गी–झोपड़ी दलित के वंचित भी धर्मांतरण, जिहादियों के प्रभाव से पलायन तथा अशिक्षा से जूझ रहे है। उनके उद्धार के लिए 2020 के कुंभ से पूर्व 100 राष्ट्र–रक्षा–यज्ञों का आयोजन कर नगरों के संयोजक बनाकर संगठन को नगरों तक विस्तार दिया। इसी चिंतन प्रक्रिया को कोरोना काल में बल मिला। जब कार्यकर्ताओं ने खुले ह्रदय से समाज को भोजन कराया। साथ ही कोरोना के प्रभाव से मुक्त होने में हमारी सनातन संस्कृति के अनुसार हाथ नहीं मिलना बल्कि नमस्ते करना, स्वास्थ्य के लिए आसन – प्राणायाम का अभ्यास, स्वच्छता, पर्यावरण शुद्ध हेतु पौधारोपण, एक साथ बैठकर मंत्र उच्चारण अपने महापुरुषों का स्मरण तथा स्वदेशी का प्रयोग जैसे बिंदुओं के माध्यम से समाज में प्रसार–प्रचार हेतु **'संस्कार परिवार मिलन'** योजना बनी जो अब संगठन की स्थाई योजना बनकर परिवार, नगर, जिला, विभाग, केंद्र स्तर तक महानगरों में तथा वनवासी क्षेत्र में भी प्रभावित काम कर रही है। परिवारों की इकाई को सुदृढ़ करने के लिए ही यह योजना शुरू हुई जो संघ की 'परिवार प्रबोधन' योजना के अनुरूप ही है, इसका उद्देश्य हर परिवार को सनातनी बनाना है।

फिर 3 वर्ष पूर्व इस उद्देश्य से **प्रतिभा विकास केंद्र** का प्रयोग शुरू किया कि सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले गरीब परिवारों के बच्चों को शिक्षित कर उनके परिवारों को संस्कार परिवार बनाए जो आगे अपने संबंधित परिवारों को भी सहयोगी परिवार बनाएं। इस प्रकार अभी इन 10,000 संस्कार परिवारों को एक लाख परिवारों तक पंहुचाने के इस चुनौती पूर्ण कार्य में इस संभाग वर्ग में ही कार्यकर्ताओं की भूमिका तय होगी।

अब आगे तीन संभागों को कुल 12 वर्ग आयोजित हो रहे हैं, जिसमें नगर स्तर के तथा प्रतिभा विकास केंद्र समिति के कार्यकर्ता भी भाग ले रहे हैं।

मा0 वीरेंद्र जी ने आगामी वार्षिक केन्द्रीय समिति बैठक के आयोजन की भी चर्चा की जो 22, 23, 24 अगस्त, 2025 को वनवासी क्षेत्र में संपन्न

होगा, जिसमें भविष्य के कार्यों की योजना बनेगी।

इस सत्र के अध्यक्ष श्री महेश कुमार ने हनुमान जयंती आयोजन पर अष्ट सिद्धियां के प्रदाता हनुमान जी के गुणों की चर्चा करते हुए अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा आदि अष्ट सिद्धियां पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र – इस सत्र में श्री मयंक शेखर जी ने **संस्कार परिवार योजना** विषय पर कहा कि इस संगठन का लक्ष्य प्रत्येक हिंदू परिवार को संस्कारित परिवार बनाना है, क्योंकि बच्चों में परिवार ही संस्कारों की नींव डालता है जो भविष्य में समाज के घटक है। 'दी केरल स्टोरी' फिल्म की चर्चा में बताया कि हमारी बेटियां सनातन संस्कार पद्धति के अभाव में जिहादियों के चंगुल में फंस जाती है और उपरोक्त फिल्म जैसी भयानक स्थिति बन जाती है। यह समस्या वनवासी–नगरीय दोनों समाजों में व्याप्त है। संस्कार परिवार योजना के पांच बिंदुओं के दैनिक रूप से परिवारों में प्रयोग द्वारा ही हम इससे बच सकते हैं। संघ ने भी अपने अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे होने पर समरसता परिवार प्रबोधन, पर्यावरण, शुद्धि, स्वदेशी, के प्रयोग तथा स्वास्थ्य इन पांच विषयों के अनवरत व्यवहार में लाने पर जोर दिया। हम **सर्वे भवंतु.......**, **वसुधैव कुटुंबकम्** की भावना को नगर, जिला, विभाग, प्रांत, स्तर पर संस्कार परिवार कार्यक्रम द्वारा ही उतार सकते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में संगठन ने प्रतिभा विकास केंद्र की दूरगामी योजना बनाई जिसे वंचित शहरी बस्ती से वनवासी समाज तक ले जाया गया। इसके लिए नगर स्तर से केंद्र स्तर तक समितियों के गठन, नगर समिति द्वारा मासिक संस्कार परिवार कार्यक्रम करना तथा प्रतिभा विकास केंद्र में बच्चों को संस्कार पूर्ण शिक्षा के साथ ही उनके परिवारों को संस्करित करना संगठन का उद्देश्य है

श्री हेमंत बत्रा जी ने बताया कि हिंदू धर्म ही सनातन धर्म तथा जीवन जीने की पद्धति है। 'हिंदू–हिंदू भाई–भाई' आज की आवश्यकता है। आज की स्थिति में हमें अपने सनातन धर्म को बढ़ाना मतलब हिंदू समाज को धर्मान्तरण से बचाना है। हमें दो वर्षों से कम समय में ही अपने प्रयासों द्वारा एक लाख संस्कार परिवार बनाने हैं। सनातन धर्म की रक्षा ही हमारा लक्ष्य है।

तृतीय सत्र में वीरेंद्र जी (नोएडा) ने बताया कि 16 प्रान्तों में 1200 से अधिक प्रतिभा विकास केंद्र के रूप में हमारा कार्य चल रहा है। हमारे कार्य का आधार संस्कार परिवार योजना है। वीरेंद्र जी ने प्रतिभा विकास केंद्र की कार्य विधि को संक्षेप में समझाया। इन बच्चों के परिवारों के साथ मासिक रूप से संस्कार परिवार मिलन संपन्न होता है। इस वर्ष सभी केंद्रों में बच्चों के परिवारों के साथ समर्पण दिवस (रामनवमी) मनाया गया। विश्वास है कि भविष्य में यह कार्य मार्ग की सभी कठिनाईयों को पार करते हुए सफलता के प्रतिमान छुएगा तथा हम देश में 50 लाख परिवारों को सनातन परिवार के चिंतन से जोड़ पाएंगे।

सत्राध्यक्ष श्री सुनील अग्रवाल ने कहा हमें योजना के अनुसार समय रहते ही संग्रह का कार्य करते रहना चाहिए। क्योंकि वर्ष के अंत में मार्च तक आते–आते अधिकतर बंधु इधर–उधर सहयोग कर चुके होते हैं। अतः हमें अधिक से अधिक मित्रों–परिवारजनों को संगठन से जोड़ने का भरसक प्रयत्न करना है। हमें प्रत्येक प्रतिभा विकास केंद्र क्षेत्र के 10 वरिष्ठ जनों के नाम नोट कर संस्कार परिवार कार्यक्रम में निमंत्रण कर अपने कार्यों को दिखाना है जो भविष्य में हमारे रक्षा परिवार बनेंगे।

चतुर्थ सत्र का विषय **रक्षा परिवार निर्माण** रहा जिसमें सुरेश गुप्ता जी का मार्गदर्शन मिला। श्री सुरेश गुप्ता ने कहा कि वनवासी समाज के उत्थान तथा प्रतिभा विकास केंद्र की संख्या बढ़ाने के लिए

नगरीय समाज के प्रबुद्ध समृद्ध बन्धुओं को स्थानीय प्रतिभा विकास केंद्र पर आमंत्रित कर उन्हें अपना काम दिखाएं तथा लगातार संपर्क में रहें जिससे उनमें सहयोग का भाव बनेगा। एवम् हमें एक लाख संस्कार परिवार बनाने हेतु 25 लाख परिवारों से संपर्क स्थापित करना होगा।

श्री वेद रस्तोगी जी ने कार्यकर्ताओं से संगठन की शक्ति बढ़ाने में प्रतिदिन एक घंटा लगाने का सुझाव दिया। श्री सचिन अग्रवाल (आर्थिक सलाहकार) ने प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से बच्चों के जीवन निर्माण की इस प्रक्रिया में यथासंभव अपने परिचितों को जोड़ने का आग्रह किया।

पंचम सत्र में युवा विभाग को सक्रिय करने की दृष्टि से **सत्राध्यक्ष** श्री दिव्यांशु पांडे ने बताया कि समाज में संस्कार युक्त परिवार बनाना ही संगठन का उद्देश्य है जिसकी नितान्त आवश्यकता गरीब, वंचित समाज में है। प्रतिभा विकास केंद्र द्वारा इन बच्चों को संस्कारित कर उनके अधिकाधिक परिवारों को भी संस्कार परिवार कार्यक्रम में बुलाना होगा। समय बदलने के साथ हथियारों का स्वरूप बदल रहा है सोशल मीडिया नकारात्मक विमर्श बना रहा है। हिंदू सनातन संस्कृति के विरुद्ध। अतः हम युवा कार्यकर्ता भी संगठन साहित्य के साथ सोशल मीडिया फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप का प्रयोग अपने संगठन के विस्तार में करेंगे।

श्री मयूर कालरा (नोएडा) ने भी उपरोक्त सोशल मीडिया साधनों के द्वारा अधिकतम लोगों को जोड़ने का सुझाव दिया। पूर्वी विभाग महिला समिति अध्यक्ष श्रीमती निशी गुप्ता ने अपने विभाग में महिला समिति के कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया।

अंतिम समापन सत्र समाधान सुझावों का रहा। यमुना विहार विभाग के अध्यक्ष श्री सुरेश गुप्ता जी ने कहा केंद्रीय कार्यक्रम आयोजन वर्ष के मध्य में किया जाए जिससे संग्रह करने का पर्याप्त समय मिलेगा। समाज, परिवार, इकाई के बिना हम अकेले नहीं चल सकते। अतः संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम के द्वारा हम लगातार समाज से बन्धुओं से संपर्क बनाएं।

इसी सत्र में श्रीमती पल्लवी चंद्र को गांधीनगर जिला की संयोजक का दायित्व मिला। नोएडा विभाग के कार्याध्यक्ष का दायित्व दिया श्री मयूर कालरा को।

अंत में माननीय वीरेंद्र जी ने चिंतन रुप में बताया कि हम हमेशा स्वामी विवेकानंद के चिंतन को अपने समक्ष रखते हैं जो स्पष्ट रूप से समाज को दिशा देने वाला है। धर्म का नाम ही संस्कार है। जब तक धर्म इस देश में जिंदा रहेगा इस देश का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। संस्कार के बिना शिक्षित व्यक्ति, मन की दृढ़ता, ज्ञान भी दिशाहीन हो गया है। श्री राकेश सिंगला ने माननीय वीरेंद्र जी को सब की प्रेरणा का स्रोत कहा जिनसे प्रेरणा पाकर ही हम संगठन के प्रति समर्पण होते हैं।

अंत में नोएडा विभाग से केंद्रीय मंत्री श्री राजेश दत्ता जी ने कार्यक्रम को सफल आयोजन में लगे तथा उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्वी संभाग के समान ही उत्तरी संभाग तथा दक्षिणी संभाग के भी चिंतन वर्ग समान उद्देश्यों तथा कर्त्तव्यों को लेकर सम्पन्न हुए जिससे इस वर्ष के अन्त तक वे अपने–अपने निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु संगठन के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ सेवा–कार्यों में जुट जाएं।

अखिल भारतीय पंचदिवसीय सेवाव्रती वर्ग

वीरेन्द्र कौण्डिन्य
केन्द्रीय संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

सत्र 2025–2026 हमारे लिए कार्य–विस्तार एवं गुणात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष है। एतदर्थ हमने अपने हर स्तर पर कार्यकर्ताओं की गुणवत्ता एवं कार्यक्षमता के विकास को प्राथमिकता दी है तथा इन श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं के बल पर प्रतिभा विकास केन्द्रों का त्वरित एवं योग्य विस्तार का लक्ष्य निर्धारित किया है। कार्य के विस्तार के लिए सबसे पहली आवश्यकता योग्य कार्यकर्ताओं की टोली है। ऐसे कार्यकर्ताओं का संच जो संगठन व संगठन की कार्य–पद्धति को भली प्रकार समझता हो तथा साथ ही साथ कार्य एवं संगठन के प्रति निष्ठावान एवं जागरुक हो।

इस बात का ध्यान रखते हुए सेवाव्रतियों का पञ्चदिवसीय अखिल भारतीय सेवाव्रती कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'** के संदेश से अभिभूत कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण की पावन नगरी वृंदावन–मथुरा में 17 अप्रैल की प्रातः से 22 अप्रैल, 2025 की प्रातःकाल को सम्पन्न हुआ।

इस वर्ग में उत्तरी असम, उत्तर बंग, मध्य बंग, दक्षिण बंग, पूर्वी ओडिशा, पश्चिमी ओडिशा, झारखंड, दक्षिण बिहार, ब्रज प्रदेश, मेरठ प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मालवा, जयपुर, चितौड़ तथा उत्तरी तमिलनाडु एवं दक्षिणी तमिलनाडु जैसे सुदूरवर्ती 17 प्रांतों से कुल 112 सेवाव्रती एवं 5 अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं, 5 केन्द्रीय अधिकारियों, 5 संत प्रवर,, दो दर्जन से अधिक स्थानीय व केन्द्रीय कार्यकर्ताओं, प्रतिभा विकास केन्द्र के 12 वरिष्ठ सेवाव्रतियों, कार्यालयीन कार्यकर्ताओं सहित 166 लोगों की उल्लासपूर्ण एवं उल्लेखनीय सहभागिता हुई।

श्री कुंजबिहारी सेवाधाम, वृंदावन–मथुरा के आतिथ्य में आयोजित सेवाव्रतियों की पंचदिवसीय साधना का यह वर्ग मात्र संख्यात्मक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं रहा अपितु ज्ञानात्मक, कौशलात्मक एवं भावनात्मक विकास की दृष्टि से भी अत्यंत सफल एवं उत्साहवर्धक रहा। वर्ग प्रमुख श्री वीरेन्द्र कौण्डिन्य द्वारा वर्ग के अधिकांश सत्रों की रचना एवं विषयों का संयोजन प्रायः चर्चात्मक करने के कारण हर सत्र में प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता स्वाभाविक रुप से बनी रही तथा उनकी ग्राह्यता के अनुरुप निर्धारित विषयों का सफल प्रतिपादन संभव हो सका।

वर्ग में ज्येष्ठ–श्रेष्ठ केन्द्रीय अधिकारियों में विहिप के केन्द्रीय संगठन महामंत्री माननीय मिलिंद परांडे जी द्वारा हिन्दुत्व की अवधारणा एवं इसकी वर्तमान वैश्विक आवश्यकता, केन्द्रीय सह संगठन मंत्री माननीय विनायक राव देशपांडे जी द्वारा सेवा परोपकार नहीं अपितु हमारा सामाजिक दायित्व है तथा धर्म प्रसार विभाग के केन्द्रीय प्रमुख मा. सुधांशु पटनायक जी द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् तथा धर्म प्रसार विभाग हमारे कार्यकर्ताओं के लिए 'प्रेरणा का स्रोत' विषय पर सारगर्भित मार्गदर्शन प्रशिक्षणार्थियों के लिए विशेष प्रेरणास्पद रहे। संत–प्रवर की श्रृंखला में राष्ट्रवादी संत श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविन्दानंद तीर्थ जी महाराज एवं पूज्य स्वामी डॉ सत्यमित्रानंद जी महाराज की प्रेरक आध्यात्मिक वाणी कार्यकर्ताओं के लिए चिरस्मरणीय रहेगी।

इन विशिष्ट अधिकारियों एवं संतों के

प्रेरणादायक मार्गदर्शन के साथ इस अवसर पर पूरे समय उपस्थित रहकर विहिप के केन्द्रीय सह मंत्री, धर्म प्रसार विभाग के सह प्रमुख तथा वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के केन्द्रीय संगठन प्रभारी मा. वीरेन्द्र जी भाई साहब सबका उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन करते रहे। वर्ग में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के केन्द्रीय महामंत्री श्री दिग्विजय गुप्ता जी, मालवा प्रांत प्रभारी श्रीमती मंजू नायर जी, प्रांत प्रमुख डॉ विनय दत्ता, सह प्रांत प्रमुख श्री प्रफुल्ल बोरकर जी, जयपुर प्रांत धर्मप्रसार विभाग के प्रमुख श्री सी.एम.भार्गव जी, ब्रज प्रांत प्रमुख श्री रामनाथ शर्मा जी, समाजसेवी श्रीमती सुषमा अग्रवाल आदि की स्नेहिल उपस्थिति से सभी उत्साहित थे।

पाँच दिनों के इस प्रशिक्षण वर्ग में श्लोकों, मंत्रों, गीतों का सस्वर सघन अभ्यास के साथ शारीरिक, योग–व्यायाम, आसन, प्राणायाम तथा विविध प्रकार के बाल मनोरंजक खेलों की बारीकियों का अच्छा अभ्यास हुआ। प्रशिक्षण वर्ग के प्रमुख तथा केन्द्रीय संयोजक के कुशल मार्गदर्शन एवं सौम्य नेतृत्व में इनकी सहयोगी टीम के सदस्य श्री बलराम सिंह,श्री धनंजय कुमार सिंह, श्री रतन कुमार, भरत सिंह, अंगद सिंह, श्रीमती दिव्या मेहता, श्रीमती अल्पना ठाकुर एवं श्रीमती शारदा साठे, सुश्री महक कश्यप आदि का वर्ग की सोल्लास पूर्णता में सराहनीय भूमिका रही।

समापन सत्र में माननीय मिलिंद जी का प्रेरक पाथेय, पूज्य संत स्वामी श्री माधवानंद जी महाराज की अंमृतमयी वाणी तथा महामण्डलेश्वर पूज्यनीया साध्वी श्रीध्यानमूर्ति जी महाराज की आत्मीय एवं सहयोगपूर्ण उपस्थिति तथा श्री अशोक गुप्ता जी की आतिथ्य व्यवस्था चिरस्मरणीय रहेगी। समग्रता में यह प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं को अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में लम्बे समय तक प्रेरित करता रहेगा।

चिट्टागांव क्रांति के वनवासी महानायक अमर शहीद मास्टरदा सूर्यसेन

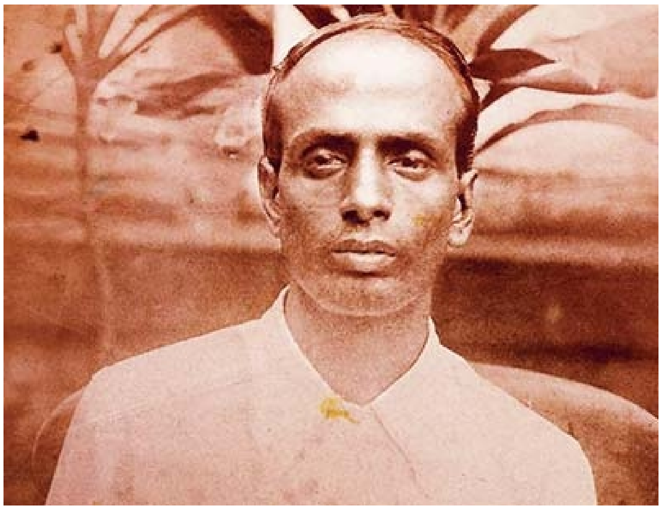

चन्द्रशेखर आजाद हों या मास्टर सूर्यसेन सभी सशस्त्र क्रांतिकारियों का एक ही मकसद था, भारतमाता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराकर करोड़ों देशवासियों को, भय–मुक्त वातावरण में सिर उठा कर स्वतंत्रतापूर्वक रहने की सुविधा देने की। इस हेतु उन्होंने पारिवारिक और सामाजिक सुखों का भी त्याग किया। अंग्रेजी शासकों की निर्दयता और आमजनों के पीड़ा से त्रस्त होकर इन क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के सैनिक और पुलिस ठिकानों पर छापे मारे, यूरोपियन जैक को उतारकर तिरंगा फहराया। अंत तक उन्होंने अपने साथियों पर आंच न आने दी। **ऐसे ही चिट्टागांव का नाम पूरे भारत में प्रसिद्ध करने वाले नरनाहर मास्टर सूर्यसेन हुए हैं।** इनके अदम्य साहस, शौर्य, संगठन शक्ति और ओजस्वी भाषणों ने बंगालियों को जुझारू योद्धा बनने को अनुप्राणित किया। सूर्यसेन का जन्म नौपारा (पूर्वी बंगाल) में 22 मार्च 1894 को श्री रमनीरंजन सेन के घर हुआ। उनके पिता एक कर्तव्यपरायण शिक्षक थे।

बहरानपुर कालेज में बी.ए. की पढ़ाई के दौरान उनके एक देशप्रेमी शिक्षक ने देश के विभिन्न भागों में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में बताया। फिर क्या था. उनके मन में भी देशवासियों के स्वाभिमान की रक्षा की भावना हिलोरें मारने लगी।

वे 'अनुशीलन समिति' से जुड़ गए। इस समिति से जुड़कर उन्होंने क्रांतिकारियों के जीवनदर्शन और ध्येय को हृदयंगम किया। आईरिस स्वतंत्रता सेनानी जॉन ब्रेन उनके आदर्श नेता थे। बी. ए. पास करके वे चिट्टागांव के नेशनल नन्दनकानन में शिक्षक का काम करने लगे। ओजस्वी व देशभक्त होने के कारण उन्हें शिष्यों और आम जनों से अपार सम्मान व श्रद्धा मिली। अध्यापन के साथ ये अपना पूरा समय देश के लिए लगाते रहे।

1918 को वे नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1930 में सूर्यसेन के नेतृत्व में भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु सैकड़ों युवकों ने, चिट्टागांव के सरकारी संचार तंत्रों को क्षति पहुंचाई। चिट्टागांव के किसानों, मजदूरों की दयनीय स्थिति, अंग्रेजी हुकूमत के दोगलापन को जाहिर करते स्वाभिमानी नरनाहरों ने इस पर धावा बोलकर बहरी सरकार को चेताने की योजना बनाई। इससे चिट्टागांव शस्त्रागार काण्ड ने अंग्रेजों नींद की उड़ा दी। 'डाइनामाइट काण्ड' में भी वे अंग्रेजों को चकमा देकर भाग गये। गोरिल्ला पद्धति अपनाने के कारण चिट्टागांव क्रांतिकारियों को पकड़ना आसान काम न था। गांवों के आम घरों में इन्हें छुपने हेतु आमंत्रित किया जाता। ऐसे में अंग्रेजों

ने छल–बल का सहारा लिया।

गुप्तचरों ने विश्वासघातियों को, क्रांतिकारियों को पकड़वाने हेतु प्रलोभित किया। 16 फरवरी 1933 को एक विश्वासघाती ने उन्हें अपने साथियों सहित पुलिस के हाथों कैद करवा दिया। तारकेश्वर दत्त, तालुकदार और सूर्यसेन को राजद्रोह के आरोप में फांसी की सजा सुनाई गई। उनकी साथिन कल्पना दत्त जोशी को मृत्युदण्ड की सजा सुनाई गई थी जो जनता के दबाव में आजीवन कारावास में परिवर्तित की गई।

11 जनवरी 1934 को फांसी से पूर्व की रात्रि में सूर्यसेन ने 'वंदेमातरम्' का उद्घोष किया, जिसे सुनकर अन्य देशभक्त कैदी भी 'वंदेमातरम्' के नारे लगाने लगे। देशभक्तों का मृत्युपूर्व यह जज़्बा देख कुछ सिरफिरे पुलिसकर्मियों ने हथौड़े से मार–मार कर उनके दांत और हड्डियों की संधियां तोड़ दी। मृत्युपूर्व सागरमाल गोपा की तरह, वे भी अमानुषिक यातनाओं के शिकार हुए। बाद में उनका क्षतविक्षत शरीर समय से पूर्व फांसी फंदे में लटका दिया गया। लेकिन इससे कांतिकारियों का मनोबल टूटा नहीं, अपितु दुगुने जोश से शहीद सूर्यसेन और उनके साथियों की शहादत का बदला लेने हेतु अपने कार्यों में जुट गया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शिक्षिकों की बहुमूल्य भूमिका रही है। अपने प्राणों की आहुति देने वाले शूरवीर शहीद क्रातिकारी मास्टर गेंदालाल, मास्टर सूर्यसेन भी देशहित में अपने जीवन की आहुति देने वाले वनवासी नायक रहे हैं।

'जाह्नवी' पत्रिका से साभार

संगठन से जुड़ने का अनुभव

आचार्या रमा
बाल गंगाधर तिलक प्रतिभा विकास केन्द्र, कंझावला

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रतिभा विकास केन्द्र की स्थापना की गई है। बच्चों की प्रतिभा का विकास करना इस प्रतिभा विकास केन्द्र का मुख्य उदेश्य है। इससे बच्चों का मानसिक विकास तेजी से हो रहा है।

बच्चे संस्कार की ओर आगे बढ़ रहे है। जिसमे बच्चों को वंदना क्रम, आसन, प्राणायाम, योग कराते है। प्रतिभा विकास केन्द्र से जुड़ने से मैंने अपने आप में भी बहुत बदलाव महसूस किया है। हमारे प्रतिभा विकास केन्द्रों में महीने मे एक बार अभिभावक मिलन कार्यक्रम होता है। तब अभिभावक मिलन कार्यक्रम भी प्रतिभा विकास केन्द्रों की तरफ से आकर्षित होने लगे है। प्रतिभा विकास केन्द्रों में सभी त्यौहार और जयंतियाँ मनाई जाती है जिससे बच्चों को हिन्दू धर्म की ओर आकर्षित कर रहा है।

प्रतिभा विकास केन्द्रों में हिन्दी और अंग्रेजी की किताबे पढाई जाती है संस्कृत, गणित विज्ञान सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम पूरा कराया जाता है बच्चे भी पढाई में रूचि लेने लगे है। यह प्रतिभा विकास केन्द्र बच्चों की प्रतिभाओं का विकास के साथ साथ बच्चों के घर तक जुडने का कार्य भी कर रहा है।

संस्कृति व सभ्यता

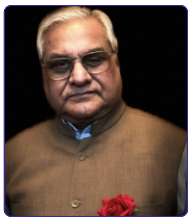

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

प्राप्त संस्कार यदि व्यक्ति के आचार, विचार व व्यवहार में प्रवेश कर जाएं तो वह संस्कारित माना जाता है। निपुण होने पर यह संस्कृति कहलाएगी।

भौतिक स्तर पर सम्यता के विकास की यात्रा में मानव समूहों ने विभिन्न जल स्रोतों एवं नदियों के किनारे ही वनस्पति की प्रचुरता देखकर आवश्यकतानुसार अन्न आदि की कृषि आरम्भ की। स्वच्छता के मानदंड भी निर्धारित होते गए। सभ्यता के विकास के परिणाम स्वरुप आध्यात्मिक विकास होने पर संसार में विभिन्न संस्कृतियों ने जन्म लिया।

कल्चर का मूल अर्थ एक ''कला'' है। उसे विकसित करना Cultivation है। उस कला के विशेषज्ञों के समूह को Cult कहा जायगा।

यदि यही मानदंड आध्यात्मिक स्तर पर प्रयोग किये जाएं तो यही प्रक्रिया संस्कार – सभ्यता – संस्कृति कहलाएगी।

संस्कृति :– **मानवता** – परमात्मा ने मानव जाति को **'मानव धर्म'** देकर उत्पन्न किया है। मनुष्य का अर्थ ही है 'मननशील प्राणी', उसे मनन करने योग्य बुद्धि देकर, धर्म के अनुसार कर्म करने की स्वतंत्रता भी दे दी।

सभ्यता :– कल्याणकारी विचारों का उदय होते ही मनुष्य, धर्म के अनुसार कर्म करते हुए सभ्य व्यक्तियों की श्रेणी में गिना जाने लगता है। ऐसे सभ्य व्यक्तियों के समूह को 'सभा' व प्रत्येक सदस्य को सभासद् कहा जाता है। अर्थात् मनुष्य से मानव बनना सभ्यता की यात्रा है।

संस्कृति :– जब यही सभ्यता हमारे बाह्य परिवेश से हमारे ही अंतर में प्रवेश कर हमें एक स्वचालित व स्वप्रेरणा से निरंतर, स्वार्थ से परमार्थ की ओर कर्म करने को उन्मुख करने लगती है तो हम स्वाभाविक ही सभ्यता से ''संस्कृति'' की ओर यात्रा करने लगते है।

प्रमुख लक्षण :– धर्म :– जब मानव की मानवता आचरण में आ जाये तो 'ज्ञान' जब वही सभ्यक् ज्ञान से जीवन ही आचरणमय हो जाय तो ''धर्म'' की पालना होने लगती है।

मनुर्भव :– अर्थात् जानना, मानना, सत्य को कहना व उस पर आचरण करना तो 'सत्यं वद धर्मं चर' की पूर्ति तथा **'मनुर्भव जनया दैव्यंजनम्' (10.53.6)** अर्थात् मनुर्भव का पालन करते हुए वेद की परिभाषा में हम मनुष्य से देव बन जाते हैं। और देवतुल्य विचार, आचार, आहार, विद्या व हमारा व्यवहार हमारी संस्कृति बन जाता है।

दैव्यंजनम् :– 'आत्मवत सर्वभूतेषु' तथा सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः'' का वैदिक विचार सूत्र हमें विश्व की सर्वश्रेष्ठ ''सत्य सनातन वैदिक संस्कृति'' का एक घटक व वाहक बना देता है।

समस्त धर्मग्रंथ :– 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति' के अनुसार भारत भूमि में जन्मे विभिन्न मत, पंथ अनेकों मतभेदों के होते हुए भी किसी एक ''सत्य'' पर अवश्य ही एक मत होते हैं, जिसे हम ''अनेकांत'' की संज्ञा दे सकते हैं।

संस्कृति के 12 आधार – चार वर्ण, चार आश्रम व चार पुरुशार्थ पर आधारित यजुर्वेद् में **'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववाराः'** कहा है।

उपरोक्त बारह स्तंभों पर टिका यह आर्य

संस्कृति का भवन अत्यन्त ही भव्य, मजबूत व अद्वितीय है।

चार आश्रम :— **चार पुरुषार्थ :—** मनुष्य योनि की अपेक्षित 100 वर्ष की आयु के काल खंड को चार पुरुशार्थ के अनुसार 'धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष' में संयोजित का दिया गया है।

चार वर्ण :— पुरुषार्थ द्वारा अर्जित क्षमता व ज्ञान को पुनः गुण व स्वभाव के अनुकूल वर्णों में विभाजित कर सम्पूर्ण समाज शरीर को मानव शरीर की भांति ही पूर्णतः सुसंबद्ध व अन्यान्योन्याश्रित कर परस्पर परिपूरक बनाकर एक अद्भुत सांस्कृतिक स्वरुप दे दिया गया है।

निष्कर्ष :— जिस प्रकार शरीर इंद्रियों के माध्यम से तभी तक सक्रिय है जब तक उसमें आत्मा है। अर्थात् सभ्यता भी शरीर के रुप में तभी तक जीवित है जब तक उसमें आत्मा रुपी संस्कृति सूक्ष्म रुप में विद्यमान है।

सभ्यता :— मानव ने संस्कार को अपने रहने लायक, सुरक्षित, सुखद व शांतिपूर्ण बनाया है, यह उसकी सभ्यता है।

एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किये जाने वाले सभी जड़ पदार्थ अर्थात भौतिक साधन, बाह्य पहिनावे व आचरण की परम्पराएं, कला कौशल व सामाजिक मूल्यों को हम सभ्यता के अतंर्गत रख सकते हैं।

शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व के आधार पर शिष्ट आचार विचार व व्यवहार, मानव को "सभ्य" की श्रेणी में लाता है, जहां वह अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण रुप से आग्रही रहकर अन्यों के अधिकारों का भी सम्मान करने का अभ्यास रखता है।

सभ्य समाज वही है जहां प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति का अवसर समान रुप से प्राप्त हो। प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं में इसी हेतु 'लोकसभा तथा राज्यसभा' आदि का प्रावधान किया गया है।

संगठन सूक्त :— ऋृग्वेद के दशम मंडल के अंतिम सूक्त के यह मंत्र दृष्टव्य है :—

"ओं संगच्छध्वं, संवदध्वं
सं वो मनांसि जानताम।" ऋ 10.191.2

अर्थात हे मनुष्यों ! परस्पर मिलकर चलो, परस्पर बात करो तथा एक समान मन होकर ज्ञान को प्राप्त करो।

निष्कर्ष :— सभ्यता ही मानव को समाज में प्रतिष्ठित करती है, उसे पशु से मनुष्य की श्रेणी में लाती है। शास्त्रों में कहा भी गया है।

"आहार, निद्रा, भय, मैथुनं च,
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणां"

सामाजिक व्यवहार द्वारा ही कुछ व्यक्ति, समाज अथवा देश 'अर्ध सभ्यं अथवा असभ्य' कहलाने लगे।

संस्कृति व सभ्यता में मूलभूत अंतर :— संस्कार ग्रहण से आरंभ हुई मानव यात्रा जब स्वयं के लाभ—हानि का आकलन कर स्वयं के ही हित—साधन हेतु शिष्ट आचार, विचार व व्यवहार में परिणत हो जाती है तो वह "सभ्यता" कहलाने लगती है। इसे संस्कृत में **"अभ्युदय"** की श्रेणी में गिना जाता है। 'प्रेय मार्ग' भी यही है। यह स्थूल स्वरुप है।

साधन सम्पन्न होकर जब मनुष्य आध्यात्मिक चिंतन की ओर उन्मुख होने लगता है, तथा वह स्वार्थ को गौण समझ कर परमार्थ को वरीयता देने लगता है, वह **'श्रेय मार्ग'** की ओर चलता हुआ **'निश्रेयस'** की यात्रा पर निकल पड़ता है तो वह उसकी **"संस्कृति"** बन जाती है। सूक्ष्म स्वरुप सभ्यता का संबंध बहिरंग से है तो संस्कृति का अंतरंग से।

—x—

चित्तौड़ प्रांत में जिलाशः वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वीरेन्द्र कौण्डिन्य
केन्द्रीय संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

राजस्थान एक ओर जहां राजे– राजवाड़े, वीरता–साहस, त्याग–बलिदान के लिए विख्यात है तो दूसरी ओर यहां के पथरीले, रेतीले मरुस्थल तथा हरे–भरे वन अंचल भी आकर्षण का केन्द्र हैं। सांगठनिक प्रांत चितौड़ में एक बहुत बड़ा जन–समूह सदियों से निवास कर रहा है जिसने कभी राष्ट्र–रक्षा एवं सनातन संस्कृति की गौरव–पताका को ऊँचा रखने वाले वीर–शिरोमणि एवं राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप जी की प्राण रक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी तक लगा दी थी। स्वदेश प्रेम एवं स्वाभिमान के लिये प्रसिद्ध यह वनक्षेत्र स्वाधीनता प्राप्ति के दशकों बाद भी आज शिक्षा, कृषि, रोजगार,स्वावलंबन की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा है। नतीजा है कि ऐसे सुदूर पर्वतीय क्षेत्र के भोले–भाले लोगों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य के नाम पर भयादोहन कर, लोभ–लालच एवं भयाक्रांत कर राष्ट्र की मुख्य धारा से इन्हें तोड़ने, धर्मांतरित कर सनातन हिन्दू समाज को कमजोर करने का दुस्साहस विदेशी मिशनरियों, मदरसे एवं वामपंथी शक्तियों द्वारा बड़े पैमाने पर चल रहा है। इन विषम परिस्थितियों में सनातन हिन्दू परिवारों में शिक्षा, संस्कार, राष्ट्रभक्ति, स्वावलंबन एवं स्वाभिमान की भावना जगाकर ऐसे साधनविहीन वंचित परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, सुसंस्कार, प्रदान कर आरोग्ययुक्त, स्वस्थ, राष्ट्र–भक्त, स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी नागरिक बनाने के लिए वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन तथा इसके सेवाभावी पदाधिकारीगण,सेवाव्रती कार्यकर्तागण एवं आचार्यगण अहर्निश सेवारत हैं। सनातन प्रेमी राष्ट्र भक्त युवा पीढ़ी के निर्माण में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के कार्यकर्ता अपने 270 से अधिक प्रतिभा विकास केन्द्रों के माध्यम से चितौड़ प्रांत के बांसवाड़ा, सागवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर एवं प्रतापगढ़ जिले में सेवारत हैं। ऐसे केन्द्रों में पढ़ने वाले निर्धन छात्र –छात्राओं की विशिष्ट प्रतिभाओं को निखार कर उन्हें समाज एवं परिवार के लिए योग्य एवं उपयोगी, राष्ट्रभक्त, स्वाभिमानी, स्वावलंबी एवं जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की दिशा में एक बड़ा अभियान चल रहा है। ऐसे ही छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास जगाने,उनकी प्रतिभाओं को निखारने एवं समाज प्रबोधन की दृष्टि से जिलाशः वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन क्रमशः दिनांक 20. 2.2025 को अम्बापुरा (बांसवाड़ा), 21.2.2025 को शेरगढ़ (सागवाड़ा), 22.2.2025 को बेम्भई (डूंगरपुर), 23.2.2025 को प्रतापगढ़ जिला केन्द्र पर एवं 23.2.2025 को ही फलासिया (उदयपुर) में सम्पन्न हुआ।

इन पाँचों स्थान पर आयोजित इस वार्षिकोत्सव के भव्य,दिव्य एवं प्रेरणास्पद कार्यक्रम वस्तुतः इस क्षेत्र के लिए प्रथम एवं चिरस्मरणीय कार्यक्रम रहे। प्रतिभा विकास केन्द्र के नन्हें–नन्हें बच्चों के द्वारा प्रस्तुत मनोहारी रंगमंचीय कार्यक्रम हो या योगासन पर आधारित मनमुग्ध करने वाला नृत्य–संगीत, शारीरिक प्रदर्शन हो या

मंत्रों–श्लोकों की तालबद्ध प्रस्तुति, ये सभी इस क्षेत्र के लिए नूतन आनंद व सृजनात्मक संदेश देने का एक सुखद सुअवसर बन गया। हर जगह अभिभावकों, सामान्य नागरिकों एवं बच्चों की बड़ी संख्या में उपस्थिति से यह स्वाभाविक रुप से प्रकट हो रहा था कि सुदूर गांवों में चल रहे हमारे प्रतिभा विकास केन्द्रों की गतिविधियों का प्रभाव समाज पर अत्यंत सुंदर, प्रेरणास्पद है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का उद्देश्य गांवों, वनों तथा नगरों की झुग्गियों में निवास करने वाले वंचित समाज के बच्चों को सुसंस्कार युक्त शिक्षा प्रदान कर उन्हें गरीबी,सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर एक समरस, सुसम्पन्न, सुसंस्कृत, स्वाभिमानी भारत बनाना है । बच्चों के इन कार्यक्रमों ने समाज में नया जोश एवं उमंग तथा विश्वास को बढ़ाया है। ऐसे कार्यक्रमों में बच्चों की सहभागिता ने उनके अंदर की छुपी हुई प्रतिभा को निखारकर इनको आत्मविश्वास को मजबूती प्रदान की है।

चितौड़ के इस पंचदिवसीय रंगारंग प्रस्तुति की श्रृंखला में हर जगह वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के केन्द्रीय संगठन प्रभारी मा. वीरेन्द्र शर्मा जी भाई साहब , बांसवाड़ा परियोजना के प्रमुख तथा संघ के प्रचारक मा0 धर्मराज जी भाईसाहब, प्रतिभा विकास केन्द्र के केन्द्रीय संयोजक श्री वीरेन्द्र कुमार कौण्डिन्य एवं स्थानीय कई विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद् के दर्जनों पदाधिकारियों, केन्द्र संचालन समिति के सैकड़ों सदस्यों, प्रबुद्धजनों, आचार्यों एवं सेवाव्रतियों तथा हजारों की संख्या में बच्चों –अभिभावकों– सुधीजनों की उपस्थिति से पूरा वातावरण प्रफुल्लित एवं रोमांचित था। आशा है ये कार्यक्रम मील का पत्थर बन उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कार्यक्रमों की प्रस्तुति के लिये प्रेरित करते रहेंगे।

संस्कार के द्वारा समाज में परिवर्तन

सुषमा उपाध्याय
जिला निरिक्षका,
महरौल व अम्बेडकर नगर

संस्कार किसी भी समाज की नींव होते हैं। यह केवल परंपराओं का पालन नहीं, बल्कि एक ऐसा मार्गदर्शन है जो मनुष्य को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित करता है। जब एक बालक को अच्छे संस्कार मिलते हैं, तो वह न केवल अपने परिवार के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए आदर्श बन सकता है। इसी कारण है कि कहा जाता है :— "जैसे संस्कार, वैसा समाज।"

आज के बदलते समय में जहाँ तकनीक और आधुनिकता ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं नैतिक मूल्यों में गिरावट भी देखी जा रही है। बच्चों में संयम, बड़ों के प्रति आदर, और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना धीरे—धीरे कम होती जा रही है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने बच्चों को प्रारंभ से ही अच्छे संस्कार दें, जैसे सत्य बोलना, मेहनत करना, बड़ों का सम्मान करना, पर्यावरण की रक्षा करना, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाना।

जब व्यक्ति अपने भीतर अच्छे संस्कारों को आत्मसात करता है, तो उसका व्यवहार दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है। वह किसी भी परिस्थिति में संयमित और सकारात्मक रहता है। ऐसे लोग जब समाज में होते हैं, तो चारों ओर एक सकारात्मक वातावरण बनता है। यही छोटे—छोटे प्रयास धीरे—धीरे बड़े सामाजिक परिवर्तन का रूप ले लेते हैं।

संस्कार केवल परिवार में ही नहीं, विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में भी दिए जा सकते हैं। शिक्षक और समाज के वरिष्ठ नागरिकों की भूमिका इसमें बहुत महत्वपूर्ण होती है। अगर हम चाहें तो हर स्तर पर, घर स्कूल, मोहल्ला में संस्कारों के बीज बो सकते हैं और एक सुंदर, सशक्त और संस्कारी समाज की रचना कर सकते हैं।

अंततः, समाज में सच्चा और स्थायी परिवर्तन केवल कानूनों या नियमों से नहीं, बल्कि अच्छे संस्कारों के माध्यम से ही संभव है। यदि हर व्यक्ति अपने जीवन में नैतिक मूल्यों और आदर्शों को अपनाए, तो निश्चित ही हमारा समाज अधिक सुंदर, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील बन सकता है।

सनातन संस्कारों का प्रथम गुरुकुल है परिवार, जिससे समाज के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी मिलता है सहयोग/सनातन संस्कार किसी व्यक्ति ही नहीं, हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र की भी आत्मा होते हैं। जब व्यक्ति में श्रेष्ठ संस्कारों का संचार होता है, तब उसका आचरण, विचार और जीवनशैली में शुद्धता, सदाचार और सेवा भाव प्रकट होता है। यही श्रेष्ठ आचरण जब समाज के विभिन्न अंगों में प्रसारित होता है, तब एक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी जाती है। अतः यह कहना सर्वथा उचित होगा कि समाज में स्थायी और सुदृढ़ परिवर्तन संस्कारों के माध्यम से ही संभव है।

'संस्कार' संस्कृत के 'सम्' उपसर्ग और 'कृ' धातु से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है। "श्रेष्ठता की ओर ले जाने वाली प्रक्रिया"। संस्कार वह मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक

शिक्षा है, जो किसी व्यक्ति को मनुष्य से सुसंस्कृत मानव बनाती है। यह माता–पिता, गुरु, समाज और अनुभव के द्वारा अर्जित होती है। संस्कार केवल बाह्य आचरण नहीं, अपितु अंतःकरण की शुद्धता और भावना की पवित्रता का भी प्रतीक हैं।

व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका :– एक व्यक्ति का चरित्र उसके संस्कारों से निर्मित होता है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, अनुशासन, क्षमा जैसे गुणों की उत्पत्ति उसी में होती है। जिसके संस्कार पवित्र और दृढ़ होते हैं, ऐसा व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणा बनता है।

परिवार में सौहार्द का वातावरण :– जहां सद्संस्कार होते हैं, वहाँ परिवार में आपसी सम्मान, स्नेह और सहयोग की भावना रहती है। बच्चों को जीवन मूल्य वहीं से प्राप्त होते हैं, जो उन्हें जीवन भर मार्गदर्शन करते हैं।

समाज में नैतिक जागृति :– जब समाज में संस्कारित व्यक्तियों की संख्या बढ़ती है, तो अपराध, अन्याय, असहिष्णुता और भ्रष्टाचार जैसे दुर्गुण स्वतः ही समाप्त होने लगते हैं। सामाजिक व्यवस्था में संतुलन एवं समरसता उत्पन्न होती है।

राष्ट्र की उन्नति में योगदान :– एक राष्ट्र तब ही सशक्त बनता है जब उसके नागरिक कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार और संस्कारित हों। राष्ट्रभक्ति, जनसेवा और अनुशासन जैसे भाव संस्कारों से ही उत्पन्न होते हैं।

संस्कारों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रयास

शिक्षा में नैतिक मूल्यों की स्थापना :– शिक्षा केवल जानकारी का माध्यम न होकर, चरित्र निर्माण की प्रक्रिया होनी चाहिए। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा, प्रेरक जीवन प्रसंग, यज्ञ, ध्यान एवं सेवा कार्य को स्थान दिया जाना चाहिए।

परिवार की भूमिका को पुनः सशक्त बनाना :– माता–पिता को चाहिए कि वे स्वयं आदर्श बनें, और बच्चों को स्नेह, अनुशासन एवं सेवा का पाठ पढ़ाएँ। घर को प्रथम गुरुकुल बनाया जाए।

सांस्कृतिक परंपराओं को सजीव रखना :– भारतीय संस्कृति में ऐसे अनेक अवसर (संस्कार, उत्सव, व्रत, पर्व) हैं जो जीवन में सच्चरित्रता और संयम सिखाते हैं। इन परंपराओं को जीवित रखने से सामाजिक एकता और सद्भावना बनी रहती है।

मीडिया और साहित्य की सकारात्मक भूमिका :– साहित्य, चलचित्र, नाटक, और डिजिटल मीडिया को ऐसी कहानियों, विचारों और पात्रों को प्रस्तुत करना चाहिए जो समाज को सच्चे आदर्शों से जोड़ें।

आज जब हमारे देश में विदेशी शासकों द्वारा थोपी विकृत मानसिकता हावी हो गई है ऐसे समय में समाज को उन विकृतियों, से छुटकारा दिलाना आवश्यक है। हमारा सनातन समाज भौतिकता की अंधी दौड़ और नैतिक पतन से जूझ रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम पुनः अपने सनातन संस्कारों की ओर लौटें। क्योंकि वही संस्कार हैं जो मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर ले जाते हैं। यदि प्रत्येक परिवार, विद्यालय और सामाजिक संस्था संस्कारों के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दे, तो एक नया, समरस और सशक्त समाज आकार ले सकता है। इसी अवधारणा को साकार करने के लिए हमारी संस्था वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन प्रतिभा विकास केन्द्रों में झुग्गी–झोपड़ी के वंचित, दलित परिवारों के बच्चों को संस्कारित करने का भरपूर प्रयास कर रही है। यह प्रयास पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में भी एक अहम भूमिका निभा रहा है।

संस्कार एवं शिक्षा

आचार्या - प्रिया मिश्रा
मुल्लायर प्रतिभा विकास केन्द्र,
आयानगर

नमस्ते ! मेरा नाम प्रिया मिश्रा है। मेरे केन्द्र का नाम मुल्लायर प्रतिभा विकास केन्द्र है। जो मिहिरावली जिला, आयानगर में स्थित हैं। मैं शिक्षा के साथ संस्कार की मानव जीवन में महत्ता है इसके विषय में कुछ जानकारी आप सबों से साझा करना चाहती हूँ।

शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह उपहार हैं जो व्यक्ति की दशा एवं दिशा दोनों बदल देती है और संस्कार जीवन का वह अंग है, जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता हैं। जब मनुष्य में शिक्षा एवं संस्कार दोनों का विकास होगा तभी वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसर होगा।

वैसे तो शिक्षा हमें विद्यालय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों से प्राप्त हो ही जाती है.. लेकिन संस्कार (नैतिकता) हमें हर जगह नहीं प्राप्त हो सकता है।

मैं सदैव आभारी रहूँगी वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के माननीय प्रभारी श्रीमान् वीरेन्द्र शर्मा भाई साहब जी की जिसने मुझे ऐसे कार्य के योग्य समझा एवं प्रतिभा विकास केन्द्र की आचार्या दीदी बनने का सौभाग्य प्रदान किया। जहाँ मैं आर्थिक विपन्नता से जूझ रहे विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा एवं संस्कार की भेंट दे सकूं।

हालांकि मुझे संस्थान से मानधन प्राप्त होता है। परंतु एक बात यह भी मैं अपने राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपनी आने वाली पीढ़ी को शिक्षा के साथ संस्कारित होते हुए भी देखना चाहूंगी।

हमारा प्रथम कर्त्तव्य है कि हम विद्यार्थी को संस्कारित करें उसके बाद विद्यार्थी के माध्यम से उनके परिवार समाज राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को अपने सनातन, संस्कारों से जोड़ें।

प्रतिभा विकास केन्द्र - संस्कारों से समृद्ध समाज की ओर एक यात्र.........

अल्पना ठाकुर
जिला संयोजिका
जिला बुराड़ी व मध्य विभाग
प्रतिभा विकास केन्द्र

जब मैंने वर्ष 2022 में वनवासी रक्षा परिवार, फाउंडेशन से जुड़ाव पाया, तो ऐसा लगा मानो जीवन का एक आध्यात्मिक मोड़ था– शायद ईश्वर की ही योजना थी जो मुझे इस पावन कार्य से जोड़ लाई। मेरे मन में सदैव यह भावना रही कि वर्तमान समाज में हिन्दु संस्कृति का जो ह्रास हो रहा है, उसमें परिवर्तन लाना अत्यंत आवश्यक है।

अपने परिवार में मैं निरन्तर संस्कारों को स्थापित करती रही, परन्तु यह स्पष्ट हो गया कि केवल अपने परिवार तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं था। मुझे समाज में व्यापक बदलाव लाने का साहस और मार्ग इस संस्था के माध्यम से मिला।

एक आचार्या के रूप में कार्य करते हुए. मैंने लगभग 30 बच्चों और उनके माध्यम से उनके परिवारों को संस्कार योजना से जोड़ा। यह केवल बच्चों का शिक्षण नहीं था बल्कि उनके पूरे पारिवारिक ढ़ाचे में नैतिक मूल्यों, योग, प्राणायाम, और मन्त्रोच्चारण के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार था।

स्वामी विवेकानन्द जी के आदर्शों को जीवन का मूल मानते हुए मैंने ये अनुभव किया कि यदि समाज को बदलना है तो शुरुआत बच्चों से कीजिए, उनमें संस्कार और चरित्र का बीज बोइए।

यही उदाहरण है जहाँ हम बच्चों को केन्द्र मानकर कर पूरे परिवार और समाज में परिवर्तन ला रहे हैं। हमने अपने कार्य के माध्यम से बच्चों में संस्कारयुक्त शिक्षा के साथ–साथ, चित्रकला, संगीत, नृत्य और कथा–वाचन जैसे सांस्कृतिक पक्षों का भी निरंतर विकास किया। इन गतिविधियों ने बच्चों के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व और सामाजिक बोध को नया आयाम दिया।

अब प्रतिभा विकास केन्द्रों की एक जिला संयोजिका के रूप में कार्य करते हुए, मैंने

कंझावला जिले में 4 केन्द्रों, बुराड़ी जिले में 3 केन्द्रों और कमला नगर जिले में 4 केन्द्रों का उद्घाटन करवाया है। ये केवल आंकड़े नहीं हैं, ये उस परिवर्तन की शुरुआत है जिसका सपना मैंने हमेशा देखा था– एक नया भारत, अखंड भारत।

संस्कार पक्ष के माध्यम से हम बच्चों, आचार्यों और परिवारों को एकजुट कर एक संस्कारी समाज का निर्माण कर रहे है।

यह यात्रा अभी प्रारंभिक चरण में है। संस्कार पद्धति के माध्यम से हम बच्चों, परिवारों और समाज को उस मूल स्वरूप की ओर ले जा रहे हैं जो समरसता, आत्मबल और सांस्कृतिक रहे है, जो समरसता, चेतना से परिपूर्ण हो।

अंत में, मैं हृदय से वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होने मुझे यह अवसर प्रदान किया कि मैं समाज के लिए अपना कुछ योगदान दे सकूँ। यह केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि मेरे जीवन की साधना है।

अनुभव

आचार्या-प्रियका बंसल
गायत्री प्रतिभा विकास केन्द

सच में केन्द्र में होने वाला परिवार मिलन बिल्कुल अद्भूत होता है। सभी अभिभावकों का विचार, क्षेत्रों की प्रतिभा प्रस्तुति, शिक्षा संबंधी वार्तालाप तथा प्रेरणादायी कहानी सभी को मंत्रमुग्ध कर देती है, जिस पर श्रृंगार का कार्य हमारा वन्दना क्रम करता है। हमारे सनातन वेद मंत्रों के साथ योग का प्रभाव और देशभक्ति गीत बिल्कुल अलौलिक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

सभी अभिभावकों के विचार जो परिवार मिलन में सामने आते हैं जैसे पहले छात्राओं को तिथि, माह, त्योहारों का ज्ञान नहीं होता था, पर अब माता–पिता भले ही भूल जाए पर सभी छात्रा–छात्राओं को हमारी संस्कृति अनुसार आमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी तथा माह में आने वाली जंयती के बारे में पूर्ण जानकारी रहती है। कहते है ना दृश्यम अर्थात देखा हुआ, हमारे ऊपर बड़ा असर पड़ता है। इतना ही नहीं त्यौहार और जंयती के बारे केन्द्र पर सभी जंयती व त्यौहार जिस तरह से मनाएँ जाते हैं। छात्राओं में समाज में भी अच्छा प्रचार छात्राओं द्वारा हो जाता है।

हमारे केन्द्र पर आने वाली छात्राएँ मध्यम वर्ग व गरीब परिवार से होने के कारण अक्सर समाज में अपने विकास को लेकर चिंतित रहती है। ऐसे में गायत्री प्रतिभा विकास केन्द्र में उन्हें मंच पर प्रस्तुति करने का अपने–आप की प्रतिभा को निखारने का तथा अपने कर्तव्र्य के लिए निरंतर जागरुक जाता है।

अंत में कुछ ऐसी छात्राओं के नाम और विचार साझा करना चाहूँगी, जिनकी प्रतिभा ने मुझे भी झंकझोर दिया। अभी मार्च 2025 के परीक्षा परिमाण के बाद में केन्द्र की तरफ जा रही थी, अचानक मेरे, केन्द्र की एक छात्रा (आरोही) जिसके पिताजी रिक्शा चलाते चलाते है, मेरे पीछे भागी हुई आई और बोली दीदी जी धन्यवाद, मैंने कहा क्यों क्या हुआ बोली दीदी मेरे आज तक इतने नंबर नहीं आए, मैं डर गई, मैने कहां कितने आए है बेटा, तो बोली 82% और रोने लगी, मुझे खुशी हुई, पर उसके लिए बहुत बड़ी बात थी उसने कहा दीदी जी मैं कभी–भी नहीं सोच सकती थी कि मैं इतने अच्छे नम्बर ला सकती हूँ, मुझे बहुत अच्छा लगा। सच में, बच्चे को उपहार न दिया जाए तो, वह कुछ समय रोयेगा, मगर संस्कार न दिए जाए तो वह जीवन भर रोयेगा ।

इसी लिए हमारे गायत्री प्रतिभा विकास केन्द्र में सबसे ज्यादा संस्कार तथा संस्कार पक्ष पर जोर दिया जाता है। क्योंकि **''संस्कार ही अपराध खत्म कर सकते हैं, सरकार नहीं और ये किसी दुकान पर नहीं मिलते''** यह मात्र हमारे प्रतिभा विकास केन्द्र में मिलते हैं।।

अनुभव

आचार्या - ऋषिका ठाकुर
उज्जवल भविष्य प्रतिभा विकास केन्द
जिला कंझावला, नगर – प्रेम नगर

नमस्कार पाठकों, मैं ऋषिका, उज्ज्वल भविष्य प्रतिभा विकास केंद्र (**वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन**) की आचार्य हूं। हमारा उद्देश्य समाज में जागरूकता फैलाना और बच्चों में संस्कारों का विकास करना है। हम मानते हैं कि एक सशक्त समाज वहीं बन सकता है, जहाँ बच्चों को सही दिशा और मूल्यों की शिक्षा मिले।

हमारे केंद्र की विशेषता यह है कि हम केवल शारीरिक विकास तक सीमित नहीं हैं, बल्कि मानसिक और आत्मिक संतुलन को भी उतना ही महत्व देते हैं। इसी सोच के साथ हम योग, पर्यावरण जागरूकता और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे आयोजनों के माध्यम से बच्चों में समग्र विकास लाने का प्रयास कर रहे हैं।

हाल ही में आयोजित योग दिवस में बच्चों ने मंत्रोच्चारण, संकल्प, विभिन्न आसनों और प्राणायाम के माध्यम से शारीरिक और मानसिक संतुलन को महसूस किया। उन्होंने जाना कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और ध्यान के जरिये जीवन में आने वाली कठिनाइयों से निपटने की शक्ति देता है।

पर्यावरण दिवस में परिवारों की सक्रिय भागीदारी ने इस कार्यक्रम को सामूहिक प्रयास का रूप दिया। यह सहभागिता इस बात का प्रमाण थी कि जब समाज और परिवार साथ आते हैं, तो परिवर्तन संभव है।

संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम ने बच्चों, अभिभावकों और समाज के बीच रिश्तों को मजबूत किया। प्रेरणादायक गीतों और संवाद के माध्यम से हमने मिलकर पारिवारिक मूल्यों और सांस्कृतिक धरोहरों को साझा किया।

माननीय वीरेंद्र भैया जी के मार्गदर्शन ने केंद्र पर होने वाले आयोजनों को और भी प्रभावी बनाया।

इन आयोजनों की सफलता में श्रीमती अल्पना ठाकुर जी, सोनू जी, माननीय अंगद सिंह भैया जी, श्रीमान सुबोध जी जैसे वरिष्ठ मार्गदर्शकों का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जिन्होंने हमें दिशा और प्रेरणा दी।

मेरे लिए यह यात्रा व्यक्तिगत रूप से भी समृद्ध रही। एक छात्रा के रूप में, बच्चों को सिखाते हुए मैंने स्वयं भी सीखा कि संस्कारों और शिक्षा के मेल से बच्चों का व्यक्तित्व निखरता है।

संस्कार शिक्षा और सेवा : प्रतिभा विकास केन्द्र का मेरा अनुभव

मैं पिछलें ढाई वर्षो से वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन से जुड़ी हूँ जो कि ऐसा संगठन है जिसमें वनवासी क्षेत्र, वंचित समाज, पिछड़े गाँव, महानगरों की झुग्गियों में रहने वाले अभाव ग्रस्त बच्चों को भारतीय संस्कृति, संस्कार, धर्म की शिक्षा के साथ आसन, प्राणायाम, पाठयक्रम की शिक्षा बिल्कुल निःशुल्क प्रदान की जाती है।

सर्वप्रथम संगठन में मुझे प्रतिभा विकास केद्र की आचार्या का दायित्व प्राप्त हुआ। दायित्व से पूर्व माननीय वीरेन्द्र जी, संगठन प्रभारी एवं अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन से अनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा तथा सेवा भाव जैसे अनेक गुण सीखी हूँ। इन अनुभवों से प्रेरित होकर मैं अब इन मूल्यों को आगे बढ़ाने तथा बच्चों में यही संस्कार विकसित करने का प्रयास कर रही हूँ।

आचार्या के रूप में मुझे अपने समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को सनातन संस्कृति, संस्कार, महापुरूषों के जीवन की घटनाएँ श्लोक एवं भक्ति गीत सिखाना हुआ।

- योग, आसन, प्राणायाम नैतिक शिक्षा प्रदान करना।
- क्षेत्रीय आयोजनों व पर्व उत्सवों की जानकारी बच्चों को देना उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना।
- माह में एक बार होने वाले संस्कार परिवार मिलन का आयोजन कर समाज के अधिक से अधिक परिवारों को सनातन धर्म से जोड़ना योग के सिद्धातों, अभ्यासों और जीवन शैली को स्वयं में अपनाकर और दूसरों को जागरूक करके इस समाज में फैलाना हुआ।

दिव्या मेहता
संयोजिका ,
जिला व पश्चिम विभाग
प्रतिभा विकास केन्द्र

यहाँ समय के साथ मेरे दायित्व में क्रमशः वृद्धि हुई है। अब वर्तमान में मेरा जिला व पश्चिम विभाग संयोजिका का दायित्व है। इस नए उतर दायित्व के अतंर्गत मुझे वनवासी रक्षा परिवार के कार्य को और अधिक विस्तार देने तथा अधिक से अधिक पिछड़े समाज के बच्चों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

''श्रेष्ठजनानां समागमात् विद्यां नैपुण्यमेव च।
शीलं धैर्य च संप्राप्तं वरिष्ठेभ्यो नमो नमः''

वनवासी रक्षा परिवार में मासिक, अर्धवार्षिक वार्षिक आयोजिक होने वाले प्रशिक्षण वर्गों के माध्यम से आचार्यों की कार्यशैली को निरंतर निखारा और आगे बढ़ाया जा रहा है। इन प्रशिक्ष वर्गों का उद्देश्य केवल शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि आचार्यो को एक आदर्श मार्गदर्शक के रूप में तैयार करना है।

प्रतिभा विकास केन्द्रों में पढ़ने वाले बच्चों पर प्रभाव :– वनवासी रक्षा परिवार में कार्य करते हुए यह स्पष्ट रूप से अनुभव किया गया कि इस केन्द्र में आने के बाद विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं पहले ये बच्चे न तो पढ़ाई में रूचि लेते थे न किसी अनुशासन का पालन करते थे। वे अपने माता–पिता बात भी नहीं मानते थे और वे न समय का सही उपयोग ही करते थे लेकिन केन्द्रों में आने के बाद उनकी

जीवन शैली में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ हैं। अब वे न केवल अनुशासित हो गए है बल्कि पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन कर अच्छे अंक लाते है। वे अब उत्तीर्ण ही नही बल्कि उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर रहे है। वे समय का सदुपयोग करना सीख गए है और माता–पिता की बातों का भी सम्मान करते है।

इस परिवर्तन से यह सिद्ध होता है कि सही मार्गदर्शन, उचित वातावरण और प्रेरणा प्रतिभा विकास केन्द्रों के मिलने पर कोई भी विद्यार्थी अपने जीवन में बदलाव ला सकता है। वनवासी रक्षा परिवार न केवल शिक्षा दे रहा है, बल्कि संस्कारों और जीवन मूल्यों को भी सिखा रहा है।

संगठन के द्वारा आयोजित नगरीय, जिला स्तर और केन्द्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभा विकास केन्द्रों के बच्चों की भागीदारी :– इस संगठन द्वारा नगरों, जिला स्तर एवं केन्द्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभा विकास केन्द्रों के बच्चों की सक्रिय भागीदारी सराहनीय रही है। इन आयोजनों के माध्यम से बच्चों को मंच प्रदान किया गया, जिससे उनकी छिपी हुई कलात्मक प्रतिभाओं – जैसे नृत्य, गायन, चित्रकला, नाट्य प्रदर्शन आदि को उजागर होने का अवसर मिलने से उनका आत्म विश्वास बढ़ा है, यह पहल उनके समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल बच्चों के व्यक्तित्व और कौशल विकास में करते है बल्कि उन्हें समाज में अपनी एक पहचाल बनाने का अवसर भी देते है।

''कौशंल संस्कृति चैव, वर्धयन्ति सततं शुभे।
बलानां व्यक्तित्वायाति, शिक्षया कार्यक्रमतः।।''

अंत में मैं हृदय से उन संगठन के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं और अधिकारीगणों तथा का धन्यवाद् करती हूँ जिनके अथक प्रयासों और मार्गदर्शन से वंचित समाज के बच्चों को आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है। और मुझ जैसे प्रतिभा विकास केन्द्र में कार्य करने वाले आचार्यों – आचार्याओं निंरतर प्रगति की ओर बढ़ने का अवसर मिल रहा है। आपके द्वारा दिए गए अनुभव और नेतत्व से जो दिशा मिली है, वह हमारे कार्य को सहज बनाते हैं। आपका सहयोग और स्नेह हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। भविष्य में भी इसी प्रकार आपका मार्गदर्शन प्राप्त रहेगा ऐसी आशा करती हूँ।

''आचार्याणां प्रसादेन, नेतृणां च शुभेक्षणैः।
वर्धते प्रतिभा निव्यं, सेव्या साध्यते गतिः।।''

अनुभव

आचार्या-विद्या शर्मा
शहीद भगत सिंह प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरे यहाँ परिवार मिलन से मुझे बहुत अच्छा अनुभव मिला है। मेरे अभिभावकों का कहना है कि शहीद भगत सिंह प्रतिभा विकास केंद्र जो वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा चलाया जा रहा है, इसमें पढ़कर उनके बच्चो में काफी सुधार हुआ है एवं संस्कार आये हैं। श्रीमती ममता देवी, श्रीमती शांती देवी, एवं कई अन्य अभिभावक बहुत ही प्रशंसा करते है कि वी.आर.पी.एफ सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए संस्कारयुक्त निःशुल्क शिक्षा प्रदानकर काफी अच्छा कार्य कर रहे है। एक तो उनके बच्चों को संस्कार सिखाये जा रहे है, साथ ही उनके बच्चों के व्यवहार एवं पढाई में भी काफी सुधार आया है। मेरे केंद्र की एक छात्रा, दिव्या, जो अब सातवीं कक्षा में पढ़ रही है, पिछले वर्ष वी.आर.पी.एफ से कक्षा छठी में पढ़कर, पूर्व कक्षा से 101 अधिक प्राप्तांक प्राप्त किये है, और अन्य कई बच्चों के रिजल्ट में भी काफी सुधार आया है। परिवार मिलन में मेरे केंद्र की संख्या, बच्चे– 25–15 अन्य बच्चे, एवं अभिभावक और अन्य सदस्यों की संख्या भी काफी हद तक रही है। जनवरी माह में संख्या लगभग 200 रही थी, अप्रैल माह में दो बार परिवार मिलन हुआ था, और संख्या लगभग 125 रही थी। 6 अप्रैल को परिवार मिलन हुआ उसमें श्रीमान राम बिलास जी भी उपस्थित थे। 29 अप्रैल को केंद्र संगठन प्रभारी श्रीमान वीरेन्द्र शर्मा जी आये थे और उनसे मिलकर सभी छात्रों एवं अभिभावकों को बहुत ही प्रसन्नता हुई थी। उनके द्वारा बच्चों को सुनाया गया गीत 'चन्दन है इस देश की माटी', उसको सुनकर सबको बहुत ही खुशी हुई थी। मैं उनका हृदयतल से धन्यवाद् करती हूँ।

भारतीय संस्कृति-भारत की समृद्ध संस्कृति

महक कश्यप
संयोजिका, यमुना विहार विभाग
प्रतिभा विकास केन्द्र

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। भारत की संस्कृति में विविधता और बहुसंस्कृति का अद्भुत मेल है। यहाँ की संस्कृति में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, रीतियों, और परंपराओं का समावेश है।

1. त्यौहार और उत्सव :— भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में से एक है हमारे भारतीय त्यौहार भारत में विभिन्न त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे कि दिवाली, होली, दशहरा, और जन्माष्टमी। ये त्योहार भारतीय संस्कृति की विविधता और रंगीनता को दर्शाते हैं।

2. संगीत और नृत्य :— भारतीय संस्कृति में संगीत और नृत्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में विभिन्न प्रकार के संगीत और नृत्य हैं। जैसे कि शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, भांगड़ा, और कथक आदि। ये संगीत और नृत्य भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करते हैं।

3. कला और शिल्प :— भारतीय संस्कृति में कला और शिल्प का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में विभिन्न प्रकार की कला और शिल्प हैं, जैसे कि

पेंटिंग, मूर्तिकला, और हस्तशिल्प। ये कला और शिल्प भारतीय संस्कृति की समृद्धि और सौंदर्य को दर्शाते हैं।

4. आध्यात्मिकता :— भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता है इसका आध्यात्मिक ज्ञान जो वेदों, उपनिषदों और श्रीमद्भागवत गीता जैसे ग्रंथो समाहित है

भारतीय संस्कृति को बनाए रखने में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की महत्वपूर्ण भूमिका जैसा कि आज के समय में हम सभी देख पा रहे हैं। आज के युग में सफलता की ऊंचाइयों तक हर व्यक्ति पहुंचाना चाहता है। परंतु व्यक्ति अपनी संस्कृति को भूलकर आगे बढ़ता जा रहा है जिस कारण समाज में हमें कई बार हमें अव्यावहारिक घटना घटित होते हुए दिखाई दिखाई देती है

ऐसा क्यों होता है?

इसका बड़ा कारण है शुरुआत से बच्चों में संस्कार का ना होना। जैसा कि हम सभी जानते हैं बच्चा गर्भ के समय से ही संस्कार को ग्रहण करने लगता है। किसी भी बच्चे को संस्कारित करने के लिए उसकी प्रथम सीढ़ी उसकी बाल अवस्था ही होती है। माता—पिता को बच्चों के लिए रोल मॉडल बनना चाहिए। उन्हें खुद अच्छे संस्कार प्रदर्शित करने चाहिए, परंतु आजकल की व्यस्त

जिंदगी में हम सिर्फ अपने काम को ही सब कुछ समझने लगे है

इसी कारण भविष्य की चिंता करते हुए हम सभी ने एक प्रयास शुरू किया। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केन्द्रो के माध्यम से हम समाज में बच्चों के द्वारा संस्कार लाने का प्रयत्न कर रहे हैं हमारे प्रतिभा विकास केंद्र में छात्रों को 2 घंटे की निशुल्क शिक्षा दी जाती है।

जिसमें आधा घंटा संस्कार पक्ष और डेढ़ घंटा शैक्षणिक गतिविधियाँ कराई जाती है। संस्कार पक्ष के कारण सभी बच्चों में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि बढ़ती है। मंत्रो के उच्चारण से मानसिक शांति और प्राणायाम के माध्यम से शारीरिक शक्ति बढ़ती है।

प्रतिभा विकास के माध्यम से उनकी प्रतिभाओं को निखारने का एक मंच प्रदान होता है जिसमें वह अपनी भारतीय संस्कृति को साथ लेकर आगे बढ़ते हैं जिसमें वह संगीत, नृत्य, नाट्य, कला, योग, आसन–प्राणायाम। का प्रदर्शन करके अपनी भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़े रहते हैं और समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करते हैं।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अपने भारतीय संस्कृति और संस्कार को लेकर पूर्ण निष्ठा से कार्य कर रहा है और करता रहेगा

गीता के एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''

इसी कारण हम सभी को समाज के प्रति अपना कार्य सत्यनिष्ठा और सच्चाई से करना चाहिए जिससे भविष्य में भी हमारी भारतीय संस्कृति एक समृद्ध संस्कृति बनी रहे जो हमेशा विश्व को अपनी अद्धितीयता और सौंदर्य से आकर्षित करती है।

प्रतिभा विकास केन्द्र मेरा अनुभव

आचार्या-खुशी
ज्योतिबा फुले प्रतिभा विकास केन्द्र

यह केंद्र पिछले 3 वर्ष से चल रहा हैं। मुझे इस संस्था से जुड़कर कार्य करने का सौभाग्य मिला। इससे मेरे जीवन में कई बदलाव आए जो आमतौर पर नहीं आ पाते, इस संस्था ने मुझे मेरे अंदर आत्मविश्वास जगाया। और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

मेरा नाम खुशी गुप्ता है और मैंने BA (**Honours**) हिंदी में **Delhi University** से शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में मैं वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन से जुड़ी हूँ, जो एक गैर–सरकारी सामाजिक संगठन है और समाज के वंचित एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का कार्य करता है। इस संस्था के माध्यम से हमने कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जो बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करना हमने ग्रामीण और वनवासी क्षेत्रों में जाकर वहाँ रहने वाले गरीब बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया। उनके माता–पिता को शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। हमने बच्चों को सिर्फ शैक्षणिक ज्ञान नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन, स्वच्छता और सामूहिक जीवन के महत्व को भी सिखाना शुरू किया है, जिससे वे अच्छे नागरिक बन सकें।

सांस्कृतिक और खेल गतिविधियाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हमने नृत्य, गायन, चित्रकला और खेल प्रतियोगिताएं शुरू की हैं, जिससे उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़े और वे अपनी प्रतिभा को पहचान सकें।

संस्कार आधारित शिक्षा की शुरुआत हमने यह महसूस किया कि शिक्षा केवल डिग्रियाँ पाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इसलिए हमने बच्चों को नम्रता, बड़ों का सम्मान, परिश्रम, सत्यनिष्ठा और सहानुभूति जैसे मूल्यों की शिक्षा देना आरंभ किया।

हम बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों को भी जागरूक करते हैं, ताकि घर का वातावरण भी वैसा ही बने जहाँ बच्चे सीखे हुए संस्कारों को जी सकें। हमने कई बार माता–पिता के लिए बैठकें की जिनमें पारिवारिक संवाद, अनुशासन और सहयोग पर चर्चा होती है।

हमारा सपना है कि हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार करें जो पढ़ी–लिखी ही नहीं, बल्कि संस्कारवान, सजग और संवेदनशील हो, जो न केवल अपने लिए, बल्कि समाज , धर्म और देश के लिए भी जिम्मेदारी समझे।

धन्यवाद।

संगठन से आचार्या के रूप में जुड़ने का अनुभव

मेरा नाम रितु कश्यप है मैं पिछले 2 साल से केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। मेरे केन्द्र का नाम ज्ञानधारा प्रतिभा विकास केन्द्र है। संगठन से जुड़ने का अनुभव, जिसका सीधा अर्थ है एक या एक से अधिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मिलकर काम करना। किसी भी संगठन में, प्रत्येक सदस्य को एक विशिष्ट भूमिका और उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। जिसमें हमें आचार्या की भूमिका दी गयी है।

संगठन से जुड़ने पर मैंने विभिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरी हूँ, जिससे हमें नए कौशल सीखने और अपने ज्ञान का विस्तार करने के साथ–साथ बच्चों में भी परिवर्तन देखने को मिला है। बच्चें जब प्रारम्भ में आते थे बहुत शोर करना, अस्त–व्यस्त रहना। आज वहीं बच्चें केन्द्र पर आने पर नमस्ते करना, जय श्री राम बोलना, व्यवस्थित रहना, चप्पल लाइन से लगाना, मंत्रों को अच्छे से पढ़ना और साथ–साथ परिवारों में भी संस्कार आयें है।

बच्चों के माता–पिता जब मासिक परिवार मिलन कार्यक्रम आते है। बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देखनों को मिला है। तब वह बताते है कि बच्चों ने Mummy-Dady बोलना छोड़ कर माँ–पिताजी बोलते है। पैर छूते है भगवान की पूजा करतें है। अभिभावक बताते है कि बच्चों में बहुत सारे परिवर्तन हुआ है। अपने स्कूल के बच्चों को भी मंत्र सिखाते है। प्रतिभा विकास केन्द्र में बच्चों को भेजते है।

आचार्या - रितु कश्यप
ज्ञानधारा प्रतिभा विकास केन्द्र
गंगा विहार

मुझे उनके माता–पिता के द्वारा मासिक परिवार मिलन कार्यक्रम में बच्चों और परिवार के अनुभव सुनने के बाद मन को संतुष्टी और प्रेरणा मिलती है।

जिससे लगता है मुझे समाज में जीवन–जीने का उद्देश्य मिल गया है। मुझे वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का आयाम प्रतिभा विकास केन्द्र की आचार्या के रूप में कार्य कर के जीवन जीने का एक नया सार मिला। मैं संगठन की जितनी भी धन्यवाद् करू उतनी कम है। अन्त में एक बात कह कर अपने बात समाप्त करूगी कि संगठन से जुड़ना सिर्फ एक कार्य या पद प्राप्त करना नहीं है, बाल्कि संगठन के उद्देश्य को पूरा करना हमारा लक्ष्य है। देश के उत्थान में मेरा योगदान एक गिलहरी के रूप में है।

प्रतिभा विकास केन्द्र–नॉयडा विभाग विद्यार्थियों का चैतन्य वर्ग

भरत सिंह
पूर्वी संभाग संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

नॉयडा विभाग के प्रतिभा विकास केन्द्रों के बच्चों का 23 और 24 मई दो दिवसीय आवासीय चैतन्य विभाग समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा रखा गया। यह वर्ग अपने आप में अद्धभुत था जो एक अमिट छाप छोड़ गया। कक्षा 5वीं, 6वीं, 7वीं के बच्चे छोटे उम्र के नटखट बच्चे होते हैं जो बालपन से भरे होते है। लगभग 180 की संख्या में बच्चों ने भाग लिया, जिनको दो दिनों तक अनुशासन में रखना और सहजता से पालन कराना ही बहुत बड़ा कार्य था। इसके पीछे नॉएडा विभाग की एक विशेषता है कि वह नए–नए प्रयोगों के लिए जाना जाता है। नॉयडा समिति के लिए नीचे का श्लोक ठीक परिभाषित करता है।

''निश्चित्वा यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः।
अवन्ध्यकालो वश्यात्मा स वै पण्डित उच्चते।।''

कार्यकर्ताओं की कार्यनिष्ठा और समर्पण के भाव के चलते किसी भी कार्य को अन्तिम रूप परिणत करना सम्भव हो पाता है। नोएडा विभाग की परिकल्पना थी कि बच्चों के द्वारा चित्र बनवाया जाए, उन चित्रों और हस्तकलाओं की प्रदर्शनी विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में लगाया जाए। अच्छे चित्र विशिष्ट अतिथियों को भेंट स्वरूप दिया जाए। यह प्रयोग इतना सफल रहा कि इसका अनुसरण केन्द्रीय कार्यक्रम में भी किया गया।

केन्द्रीय कार्यक्रम में भारत के माननीय–सम्माननीय व्यक्तियों की, जैसे केन्द्रीय मंत्री मा0 मनोहर लाल खट्टर जी, संघ के वरिष्ठ प्रचारक मा0 भैया जी जोशी एवं अन्य उद्योगपति समूहों के प्रमुखों की, उपस्थिति रही, जिन्हें बच्चों द्वारा निर्मित चित्रों को उन्हें भेंट स्वरूप दिया गया। इस कार्य की बहुत ही सराहना की गयी। वंचित वर्ग के बच्चों की प्रतिभा से अतिथिगण अभिभूत थे। इसी कड़ी में यह दो दिवसीय चैतन्य वर्ग एक प्रकार का नया प्रयोग था जो कि अन्य विभाग एवं भारत के अन्य प्रान्तों के लिए उदाहरण बना। यह प्रयोग अद्भुत था और सफल रहा।

इस वर्ग की परिकल्पना आदरणीय विवेक अग्रवाल जी, नोएडा महानगर महामंत्री एवं राजेश दत्ता जी, केन्द्रीय सह मंत्री एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी के द्वारा लगभग 6 महिने पूर्व में की गयी थी। इसके बाद नोएडा समिति की सहमति मिली। बाद में मा0 वीरेन्द्र जी, संगठन प्रभारी, का भी मार्गदर्शन मिला। जैसा कि हम जानते है, किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए समस्याओं से पार पाना होता है।

इस वर्ग को भी सम्पादित करने मे अपने तरह की कठिनाओं का सामना करना पड़ा। जैसे कार्यक्रम स्थल का चयन, जहाँ इतने बड़ी संख्या के बच्चों एवं कार्यकर्ताओं का निवास, शौचालय, स्नानागार, भोजन बनाने की व्यवस्था इत्यादि। यही नहीं, बच्चों के अभिभावक सशंकित थे। उन्हें भी ऐसे आवासीय वर्ग का अनुभव नहीं था। अधिक संख्या बहनों की थी, अतः उनके माता–पिता कुछ अधिक ही संशय में थे। वे अपने बच्चों को वर्ग में जाने देना नहीं चाहते थे। परन्तु आचार्या दीदीयों

के अथक प्रयास से बच्चों और उनके अभिभावकों को समझाया गया। फिर बच्चों ने पंजीकरण कराया और वर्ग में भाग लिया।

यह वर्ग कई मायनों में विशेष था। इसमें बहुत सारे कार्य नवीन थे पर विशेष थे। कुछ कार्यकर्ता युवा थे, परन्तु निष्ठावान थे। इस वर्ग की विशेषता थी कि कार्यकर्ता ही नहीं अपितु उनके परिवार का हर सदस्य इस कार्य में समर्पित भाव से लगा हुआ था। उदाहरण के लिये राजेश दत्ता जी के बेटे–बहू भी बहुत ही तन्मयता से इस वर्ग की व्यवस्था में लगे थे। दोनों ने मिलकर एक सत्र भी लिया जो कि सोशल मिडिया के दुरुपयोग पर आधारित था। दोनों का समन्वय अद्भुत था। बच्चे बहुत ही उत्साहित थे और इनके वक्तव्य को तन्मयतापूर्वक सुन रहे थे। निखिल दत्ता ने योग की कुछ क्रियाओं का अभ्यास भी कराया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दृष्टी जी ने बहुत रोचक ढंग से बच्चों के समझाया। हमारी दूसरी पीढ़ी को इस तरह के कार्य करते हुए देखकर अत्यन्त सुखद अनुभूति हुई। इसी प्रकार आनन्द श्रीवास्तव जी के पुत्र को व्यवस्था संबंधित कार्य करते पाया। इन सबके अलावा विशिष्ट अधिकारी एवं कार्यकर्ता जैसे वीरेन्द्र प्रताप सिंह जी, भगवान दास जी, मयूर

कालरा जी, संजय अग्रवाल जी, अनिल निझावन जी, हरविन्दर जी, परमानन्द बत्रा जी, विवेक अग्रवाल जी आदि कई गुरुजनों को पूरे वर्ग में किसी भी कार्य को सेवा और प्रेम भाव से निःसंकोच करते पाया। घर की सुख–सुविधा को त्यागकर सरस्वती शिशु मंदिर में रूकना एक कठिन व्रत के जैसा था। मुझे आश्चर्य हुआ था कि सभी कार्यकर्ता कार्य के प्रति निष्ठा और प्रेम से भरे हुए थे। इनके अथक प्रयास और निष्ठा देखकर मैं अभिभूत हूँ। यह प्रयोग अन्य कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने में सफल होगा यह विश्वास है।

पूर्वी संभाग के नॉयडा विभाग में सम्पन्न हुआ बच्चों का 02 दिवसीय आवासीय शिविर। प्रस्तुत है वहाँ के आचार्यो के अनुभव।

दिनांक 23 मई से 24 मई तक सरस्वती शिशु मन्दिर में छात्र सब छात्राओं के लिये दो दिन के आवासीय चैतन्य शिविर का आयोजन किया गया। यह सभी छात्रों के लिये प्रथम अवसर था कि वह घर से दूर बिना माता–पिता के दो दिन तक शिविर में अनुशासित होकर जीवन जीया। सबसे पहले छात्रों ने संस्कार की प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। फिर छात्रों ने ''चित्रकारी प्रतियोगिता'' तथा ''भारत को जानो प्रतियोगिता'' में प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता के साथ–साथ छात्रों ने मैजिक शो का भी आनन्द लिया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों ने गीत और कविता सुनाई तथा देश भक्ति गीत पर नृत्य किया। इस प्रकार छात्रों के अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान किया।

अन्त में केवल यह कहना चाहूँगा कि इस प्रकार के शिविर का आयोजन समय–समय पर होते रहना चाहिये जिससे छात्रों में अनुशासन, टीम वर्क, सहयोग तथा देश के प्रति समर्पण की भावना का विकास हो सके। अन्त में सभी सम्मानित पदाधिकारी और वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन को इस सुन्दर आयोजन के लिये धन्यवाद् देना चाहता हूँ।

आचार्य
भुल्लन शर्मा
श्री कृष्ण प्रतिभा विकास केन्द्र, गढ़ी चौखन्डी

मैं चम्पा सिंह शिव प्रतिभा विकास केन्द्र की एक सक्रिय सदस्य हूँ। मुझे इस संस्था द्वारा आयोजित एक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक शिविर में भाग लेने का अवसर मिला। इस शिविर का उद्देश्य बच्चों को भारतीय संस्कृति जीवन मूल्यों और अनुशासित जीवनशौली के प्रति जागरूक करना था।

प्रत्येक दिन की शुरूआत प्रातः 04 बजे होती थी। हम सैर के लिए निकलते फिर योग कार्यक्रम होता, स्नान के पश्चात बच्चों को नाश्ता कराया जाता। पूरे दिन में कुल चार बार भोजन की उचित व्यवस्था थी। सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन, शाम का हल्का नाश्ता और रात का भोजन।

इन गतिविधियों के साथ–साथ बच्चों के मनोरंजन और रचनात्मक विकास के लिए विशेष आयोजन भी किए गए। एक जादूगर को बुलाया गया, जिसने बच्चों को भरपूर मनोरंजन किया। बच्चों द्वारा नृत्य, गायन और चित्रकला जैसी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई जिसमें उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

मुझे इस शिविर से यह अनुभव हुआ कि नियमित दिनचर्या और सुव्यवस्थित कार्यक्रम न केवल बच्चों के लिए बल्कि स्वयं हमारे लिए भी अत्यंत लाभदायक होते है। प्रतिभा विकास केन्द्र द्वारा की गई यह पहल वास्तव में सराहनीय है।

मैं इस संगठन की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस रचनात्मक और प्रेरणादायक अनुभव का हिस्सा बनने का अवसर दिया।

आचार्या–चम्पा सिंह
शिव प्रतिभा विकास केन्द्र,

"संस्कारो हि गुणानां विकासाय साधनम"
(अर्थ : संस्कार ही गुणों के विकास का साधन है')

सीमा
जिला संयोजिका,
रोहिणी व सरस्वती विहार

आज के समय में जब समाज में नैतिक मूल्यों की कमी और पारिवारिक विघटन बढ़ रहा है, तब संस्कार परिवार मिलन अति आवश्यक हो गए है। इस प्रकार के मिलन से परिवारों में एकता बच्चों में अच्छे सस्कार और सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है। हमारे प्रतिभा विकास केन्द्रों ने अपने इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्कार परिवार मिलन की योजना बनाई है। परिवार ही वह पहली पाठशाला है। जहाँ एक बच्चा जीना सीखता है। लेकिन जब परिवार में संवाद की कमी और आधुनिकता के नाम पर मूल्यहीनता आ जाती है, तब पीढ़ियाँ दिशाहीन हो जाती हैं।

ऐसे में संस्कार परिवार मिलन एक मजबूत कड़ी का कार्य करता है, जो पीढ़िया को जोड़ने का माध्यम बनता है। प्रतिभा विकास केन्द्र में पढ़ने वाले छात्रों के परिवारों के अतिरिक्त अन्य परिवारों को भी इसमें सम्मिलित कर मन्त्रों का उच्चारण, योग, प्राणायाम, आसन तथा हमारे धर्म, शास्त्र, त्यौहार और परम्पराओं के महत्व को बताया जाता है। परिवार मिलन में परिवार मिलते हैं, भजन कीर्तन, कथाएँ करते हैं, सवांद करते है, समस्याएँ साझा करते है। तथा एक दूसर से सीखते है।

इससे परिवारिक संबंध मजबूत होते हैं। जब कई सांस्कारित परिवार एक साथ आते है, तो समाज में सद्भाव और सहयोग की भावना बढ़ती है और वही संस्कारित परिवार अन्य परिवारों को भी इस आयोजन के साथ जोड़ते है। संस्कार परिवार मिलन केवल एक आयोजन नही बल्कि एक सवेदनशील सामाजिक आन्दोलन है जो परिवार, समाज और राष्ट्र को नैतिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त करता है।

"संस्कारो से सूजे परिवार,
बनाएं, सुंदर सास्कारित संसार"

रक्षा परिवार फाउंडेशन के साथ मेरा सफर.......

सोनू चौहान
जिला संयोजिका,
कंझावला व नरेला
प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरा नाम सोनू चौहान है, और मैंने वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के अंतर्गत संचालित प्रतिभा विकास केंद्रों में दो वर्षों तक आचार्य के रूप में सेवा की। इस दौरान, मैंने बच्चों को न केवल शिक्षा प्रदान की, बल्कि उन्हें संस्कारों और नैतिक मूल्यों से भी जोड़ा। यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक और संतुष्टिदायक रहा।

प्रतिभा विकास केंद्रों में बच्चों के साथ बिताए गए पल मेरे जीवन के सबसे यादगार क्षणों में से हैं। मैंने बच्चों को विभिन्न विषयों में शिक्षा दी, उनके रचनात्मक कौशल को निखारा और उन्हें भारतीय संस्कृति और मूल्यों से जोड़ने का प्रयास किया। यह देखकर अत्यंत खुशी होती थी कि बच्चे न केवल शैक्षिक रूप से प्रगति कर रहे थे, बल्कि उनके व्यक्तित्व में भी सकारात्मक बदलाव आ रहा था।

दो वर्षों की इस समर्पित सेवा के बाद, मुझे जिला संयोजिका के रूप में पदोन्नति प्राप्त हुई। यह मेरे लिए गर्व और खुशी का क्षण था। इस नई भूमिका में, मुझे और अधिक जिम्मेदारियां मिली हैं, और मैं इसे पूरे उत्साह के साथ निभा रही हूँ। रक्षा परिवार फाउंडेशन का हिस्सा होना मेरे लिए केवल एक कार्य नहीं, बल्कि एक मिशन है, जिसके माध्यम से मैं समाज के उत्थान में योगदान दे रही हूँ।

मैं भविष्य में भी इस संगठन के साथ जुड़ी रहना चाहती हूँ और बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कार्य करती रहूँगी। रक्षा परिवार फाउंडेशन ने मुझे एक ऐसा मंच प्रदान किया है, जहाँ मैं अपनी क्षमताओं का उपयोग समाज के हित में कर सकती हूँ, और इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रतिभा विकास केन्द्र - मेरा अनुभव

रोहित लोधी
प्रखण्ड संयोजक,
हाटपिप्पलिया एवं देवास
प्रतिभा विकास केन्द्र

2023 से जुड़ा था तब मैं आचार्य था मेरा पहला केंद्र था मालवा प्रांत में मैने फिर देवास जिला के 30 केंद्र किए। मेरे केंद्र का नाम महाराज तुकोजीराव प्रतिभा विकास केंद्र ग्राम राघौगढ़, जिला देवास, मध्य प्रदेश।

मुझे जोड़ने वाले डॉ विनय दत्ता जी, श्री प्रफुल जी बोरकर हैं जिन्होंने मेरी काबिलियत व मेरे अंदर एक नई ऊर्जा प्रदान की जिनकी वजह से आज मैं देवास जिले में चल रहे कार्य को आगे बढ़ाया है। साथ ही संस्कार परिवार मिलन व प्रतिभा विकास केन्द्र प्रारंभ किए। हम सबने मिलकर अपने परिवार में निरंतर संस्कारों को स्थापित करता रहा, परंतु यह स्पष्ट हो गया कि केवल अपने परिवार तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं था। मुझे समाज में बदलाव लाने का साहस और मार्ग इस संस्था के माध्यम से मिला।

एक आचार्य के रूप में कार्य करते हुए मैंने लगभग 25 बच्चों और उनके माध्यम से उनके परिवारों को संस्कार योजना से जोड़ा। यह केवल बच्चों का शिक्षण नहीं था, बल्कि उनके पूरे पारिवार का सहयोग मिला जिससे मैने उन्हें योग, प्राणायाम और मंत्रोच्चार के माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया।

जब मैने केंद्र पर बच्चों का नामांकन किया तो मुझे यह सब बहुत ही कठिन लग रहा था जिसका कारण यह था कि यह बच्चे जिस तरह की दिनचर्या सीख चुके थे उसे बदल पाना बड़ा ही असंभव प्रतीत हो रहा था ना अनुशासन की समझ ना सही प्रकार से बोलने का तरीका आदर सम्मान प्रतिष्ठा ये सब चीजें तो जैसे इनके जीवन से बहुत दूर हो किंतु माननीय वीरेंद्र जी भाईसाहब के मार्गदर्शन में मैंने बहुत कुछ सिखा और भाईसाहब जी के विचारों को समझकर मैने इन बच्चों के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास प्रारंभ किया और मुझे सफलता भी मिली।

आज इन बच्चों के जीवन में इतना बदलाव देखकर आश्चर्य भी होता है कि क्या ये वही बच्चे है। किंतु माननीय वीरेंद्र जी भाई साहब से एक बात तो जीवन में धारण करने वाली है कि यदि हम किसी दैवीय कार्य को करने का दृढ़ निश्चय कर लें तो स्वयं ईश्वर भी सदैव हमारी सहायता करते हैं।

हमारी इस कार्य पद्धति से केवल छात्रों में ही नहीं बल्कि परिवारों में अनेकों बदलाव आए। जैसे कि अब परिवार में योग प्राणायाम की महत्ता को समझने है।

अब, एक प्रखण्ड संयोजक के रूप में कार्य करते हुए, मैंने देवास जिले 3 प्रखंडों में 44 केंद्रों का उद्‌घाटन करवाया है। ये केवल आंकड़े नहीं हैं, ये उस परिवर्तन की शुरुआत है जिसका सपना मैंने हमेशा से देखा था। एक नया भारत, एक अखंड भारत।

संस्कार पक्ष के माध्यम से हम बच्चों, आचार्यों और परिवारों को एकजुट कर एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं।

अंत में, मैं हृदय से वनवासी रक्षा परिवार का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान किया कि मैं समाज के लिए अपना योगदान दे सकूं। यह केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि मेरे जीवन की साधना है।

प्रतिभा विकास केन्द्र-एक अनुभव

हमारे गाँव में पतिभा विकास केंद्र शुरू होने के बाद मुझमें और बच्चों में बहुत बदलाव आए हैं। बच्चे खुशी–खुशी पढ़ाई करने आते हैं। केंद्र में न केवल दीया जलाया जाता है, बल्कि यहाँ प्रशिक्षण के साथ–साथ खेलकूद और शारीरिक शिक्षा, कीर्तन भी सिखाया जाता है। संस्कार पद्धति के नियमों के अनुसार, केंद्र की शुरुआत दीप मंत्र, **वंदना गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र...... सरस्वती वंदना और मातृ प्रणाम** से होती है। यहाँ आने के बाद बच्चों में अपने धर्म के प्रति जागृति आई है। वे प्रतिदिन सुबह उठकर अपने माता–पिता को प्रणाम करते हैं और उनके आशीर्वाद से दिन की शुरुआत करते हैं। माता–पिता भी बहुत खुश हैं कि बच्चे अपने धर्म को आगे बढ़ा रहे हैं।

केन्द्र में आने से पूर्व इन बच्चों में ऐसा अनुशासन व्यवहार इनके माता–पिता को देखने को नहीं मिलता था। मुझे बहुत खुशी है कि मैं इस संस्था के माध्यम से गाँव के बच्चों के लिए कुछ कर सकती हूँ और उन्हें सही रास्ता दिखा सकती हूँ। इसलिए मुझे यह अवसर देने के लिए आप सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद् !

जय श्री राम ! भारत माता की जय !,

आचार्या –पूर्णिमा गौड़
कर्मा प्रतिभा विकास केन्द्र, जिला–अलिपुरद्वार, पश्चिमी बंगाल

आचार्या – संगीता
रानी लक्ष्मीबाई प्रतिभा विकास केन्द्र–1
फतेहपुर बिल्लौच बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)

मैं संगीता, रानी लक्ष्मीबाई प्रतिभा विकास केन्द्र, फतेहपुर बिल्लौच, बल्लभगढ़, फरीदाबाद की आचार्या हूँ। मेरे केन्द्र में जिन विद्यार्थियों का मेरे द्वारा सम्पूर्ण विकास किया गया है, वे विद्यार्थी पहले ठीक से बैठते नहीं थे। चप्पले भी अव्यस्थित रहती थी, अब वे विद्यार्थी व्यवस्थित ढंग से पढते है, चप्पले भी व्यवस्थित रहती है। कुछ विद्यार्थी सभी लोगों के समक्ष कक्षा में बोलने पर शर्माते थे, बोल नहीं पाते थे, लेकिन अब सभी विद्यार्थी बहुत अच्छे ढंग से बोलते और उत्तर देते हैं।

श्लोक, निबंध, कविता गीत आदि बहुत मन से सुनाते हैं। सभी विद्यार्थी योग आसन, प्राणायाम में बहुत अच्छे प्रदर्शन करते हैं, जो पहले उन्हें नहीं आता था। पुराने सभी विद्यार्थियों को संस्कार पक्ष आता है। पहले उन्हें कठिनाई आती थी। संस्कृत के शब्द बोले नहीं जाते थे। लेकिन अब सभी विद्यार्थी एक साथ मिलकर गाते तथा साथ बोलते हैं। सभी विद्यार्थियों ने वार्षिक परीक्षा में भी पहले से अधिक अंक प्राप्त किए हैं। संगठन का यह अत्यन्त सार्थक और सफल प्रयास है।

प्रतिभा विकास केन्द्र - एक अनुभव

मैं ब्राह्मणबाहा नामक एक बहुत छोटे से अविकसित गाँव से हूँ। मेरा नाम रूपा मंडल है। मैंने 2021 में ब्राह्मणबाहा हाई स्कूल से 91% अंकों के साथ माध्यमिक परीक्षा और 2023 में मयूरेष्वर हाई स्कूल से 93ः अंकों के साथ उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। अब मैं एक कॉलेज की छात्रा हूँ।

मेरे एक मित्र के माध्यम से मुझे प्रतिभा विकास केंद्र के बारे में पता चलने पर मैंने सेवाब्रती श्री सुमन लेत से संपर्क किया और उन्होंने प्रतिभा विकास केंद्र के बारे में विस्तार से बताया। फिर मैंने इसमें सेवा देने का फैसला किया।

एक दिन दोपहर में मैंने अपने गाँव का सर्वेक्षण किया और बच्चों के नाम एकत्र किए और इस योजना फिर के बारे में अभिभावकों और बच्चों के साथ भी चर्चा की कि मैं कितना कर सकती हूँ। वे यह सुनकर बहुत खुश हुए कि उनके बच्चों को कई क्षेत्रों में मुफ्त में शिक्षा और ज्ञान मिलेगा।

मैं प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से छह महीने से अपने छात्रों और उनके अभिभावकों से जुड़ी हुई हूँ। अब वे सभी मेरा बहुत सम्मान करते हैं, लेकिन केंद्र खुलने से पहले वे मुझे बेहतर तरीके से जवाब नहीं देते थे। अब यह मेरी उपलब्धि है कि मैं अधिकांश ग्रामीणों के लिए एक सम्मानित महिला बन गई हूँ। मैं बच्चों को संस्कार, नियम और कानून, हिंदू शास्त्र, प्रार्थना, हमारी प्रकृति, देवी–देवताओं की भूमिका, योग की भूमिका आदि के बारे में सिखाती हूँ। हर सुबह वे अपने बड़े को प्रणाम करते हैं और फिर उचित तरीके से केंद्र में आते हैं। अब भी वे सभी रोजाना सरकारी स्कूल जाते हैं, लेकिन इस केंद्र से पहले ज्यादातर छात्र स्कूल नहीं जाते थे।

हम अपने केंद्र में कई पूजा, किसी स्वतंत्रता सेनानी का जन्मदिन, हिंदू शास्त्र में ऋषि और कई कार्यक्रम मनाते हैं। सभी अभिभावक और ग्रामीण हमेशा मेरे छात्रों के साथ आगे बढ़ने के लिए मेरा समर्थन करते हैं।

सीताराम प्रतिभा विकास केंद्र के खुलने से पहले कुछ छात्र फीस लेकर ट्यूशन जाते थे, लेकिन उनके अभिभावकों ने देखा कि इस केंद्र में छात्रों की स्थिति बेहतर हो रही है, इसलिए उन्होंने ट्यूशन जाना बंद कर दिया। अब वे सभी मेरे नियमित छात्र हैं। पहले वे केक काटकर और मोमबत्तियाँ बुझाकर अपना जन्मदिन मनाते थे, अब वे अपने जन्मदिन पर पूजा और भजन करते हैं।

अपने बच्चों में सुधार देखकर और मासिक परिवार मिलन का स्पर्श पाकर उनके पिता भी पीना बंद कर देते हैं। मेरे छात्र अपने दोस्तों को हमारे केंद्र के बारे में बताते हैं और कुछ अन्य छात्र भी कभी–कभी मेरे केंद्र पर आने लगते हैं।

समस्याएँ–ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहाँ छात्रों के बैठने के लिए उचित स्थान नहीं है। साफ वातावरण में हम किसी तरह काम चला लेते हैं, लेकिन बरसात के मौसम में हमें बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। मानसून के मौसम में अधिकांश अभिभावक परिवार मिलन में शामिल नहीं हो पाते क्योंकि वे खेत में जाते हैं क्योंकि वे मजदूर या बटाईदार हैं।

आचार्या - रूपा मंडल
सीताराम प्रतिभा विकास केन्द्र, बीरभूम , पश्चिम बंगाल

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

प्रतिभा विकास केन्द्र कार्य वृत्त – 05 अगस्त, 2025

(संस्कार युक्त शिक्षा, स्वावलंबन एवं स्वाभिमान हेतु समर्पित)

क. कार्य का व्याप :–

1. कार्ययुक्त प्रांत – 16
   विस्तार लक्ष्य – 04 (छत्तीसगढ़, त्रिपुरा, दक्षिणी असम, जयपुर)
2. कार्ययुक्त जिला – 63
3. कार्ययुक्त प्रखंड – 85
   विस्तार लक्ष्य – 16
4. कार्ययुक्त नगर – 71
   विस्तार लक्ष्य – 67

ख. संख्यात्मक विवरण :–

1. विगत माह तक केन्द्रों की संख्या – 1249
2. वर्तमान केन्द्र संख्या – 1360
   आगामी लक्ष्य (अगस्त) – 261
3. विगत छात्र संख्या – 27124
4. वर्तमान छात्र संख्या – 27844
5. विगत अभिभावक संख्या – 20047
6. वर्तमान अभिभावक संख्या – 22517
7. विगत माह तक सम्पर्कित अन्य परिवार संख्या – 4071
8. वर्तमान सम्पर्कित अन्य परिवार संख्या – 5425
9. विगत माह तक अन्य सम्पर्कित छात्र संख्या – 3669
10. वर्तमान सम्पर्कित अन्य छात्र संख्या – 4645
11. विगत माह तक समिति सदस्य संख्या – 4592
12. वर्तमान समिति सदस्य संख्या – 4953

ग. मासिक परिवार मिलन विवरण :–

1. कुल अपेक्षित स्थान संख्या – 1249
2. सम्पन्न हुआ – 937 स्थानों पर
3. उपस्थित कुल छात्र संख्या – 16050 (57.64%)
4. उपस्थित कुल अभिभावक संख्या – 10497 (46.61%)
5. उपस्थित अन्य परिवार संख्या – 2985 (55.02%)
6. उपस्थित अन्य छात्र संख्या – 4114 (88.56%)
7. उपस्थित समिति सदस्य संख्या – 2629 (53.28%)
8. हमसे जुड़ें कुल छात्र, अभिभावक, समिति एवं अन्य लोगों की संख्या – 65384
9. इसमें मासिक संस्कार परिवार मिलन में कुल उपस्थिति हुई – 39149 (59.87%)

मुख्य संदेश

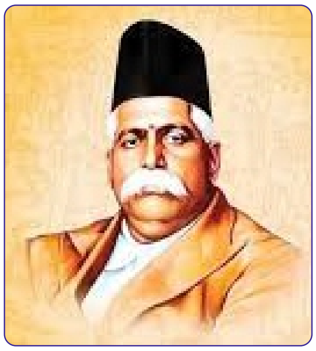

डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार
सरसंघचालक,
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जीवन स्वयं में एक जीवंत उदाहरण है कि जब उद्देश्य महान हो और मनोबल अडिग, तब कोई भी विपरीत परिस्थिति व्यक्ति को रोक नहीं सकती।

- ➢ जिस बचपन में भूख, अभाव, बीमारी और अनाथता का अंधकार था, उसी में उन्होंने नेतृत्व, विचारशीलता और राष्ट्रनिष्ठा की लौ जलानी शुरू कर दी।
- ➢ कठिनाइयों की गोद में पला यह बालक अपने भीतर मूल्य, साहस और सेवा भावना के ऐसे बीज लेकर बढ़ा, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) जैसे विराट संगठन को जन्म दिया।
- ➢ उनका जीवन हमें यह सिखाता है –
    - परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, अगर मन सच्चे उद्देश्य से ओतप्रोत है तो परिवर्तन की मशाल जलाना संभव है।
    - एक विचारशील बालक भी एक युगांतरकारी आंदोलन का जनक बन सकता है।
    - डॉ. हेडगेवार केवल एक व्यक्ति नहीं, एक युग चेतना के वाहक थे। जो आज भी हमें प्रेरणा देते हैं।